॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

दिसम्बर, 2015 वर्ष 18, अंक 12 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये

विक्रमी सम्वत् 2072 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com

एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 20

टंकारा ट्रस्ट के परम सहयोगी

आर्यरत्न श्री बृजमोहन लाल मुंजाल जी दिवंगत

सम्पूर्ण आर्य जगत् में शोक

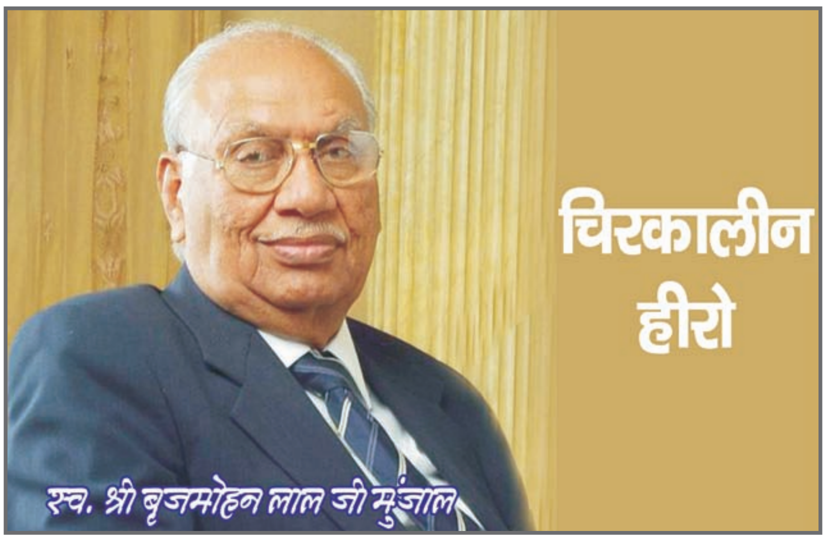

स्व. श्री बृजमोहन लाल जी मुंजाल

आर्यरत्न पद्मभूषण से सम्मानित प्रसिद्ध उद्योगपति, श्री बृजमोहन लाल मुंजाल जी का 1 नवम्बर, 2015 को 92 वर्ष की आयु में निधन हो गया। 1 जुलाई, 1923 को आपका जन्म पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के एक साधारण सद्गृहस्थ परिवार में हुआ। आप अपने गांव कमालिया (अब पाकिस्तान में) के गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजे गए। प्रारंभिक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षित एवं आर्य संस्कारों से ओत-प्रोत, यज्ञ भक्त, एक आर्य युवा ने भारत विभाजन के उपरांत दिल्ली (पुलबंगश) से प्रारम्भ किए गए कारोबार को विश्व की बुलन्दियों तक पहुंचाया और एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया, जो अपने आप में अतुलनीय है। हमें इस बात पर भी गर्व है कि जहां आज स्वदेशी की बात की जाती है, वहां पर भी आपने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। आपका व्यवसाय ऐसा प्रथम भारतीय व्यवसाय समूह हुआ जिसने जापान से प्राप्त तकनीक को छोड़कर इसे पूर्ण रूप से स्वदेशी व्यवसाय बनाया। आर्यसमाज के अनेक आर्य महासम्मेलनों के स्वागताध्यक्ष की जिम्मेदारी का आपने बहुत कुशलतापूर्वक निर्वाह किया। समाज में आपकी पहचान न केवल एक सफलतम व्यवसायी के रूप मे हुई अपितु यज्ञ प्रेमी के रूप में पहचाना जाना आपके परिवार के यज्ञ के प्रति प्रेम को दर्शाता था। लगभग 92 वर्ष की आयु होने पर भी आज आप आर्यसमाज के सत्संगों में सम्मिलित होने से अपने आपको रोक नहीं पाते थे, जो आपके हृदय में आर्यसमाज के प्रति लगाव का ही प्रतीक था।

ऋषि जन्म भूमि टंकारा के प्रति आपकी श्रद्धा इसी बात से प्रतीत होती थी कि आप तथा आपके परिवार के सदस्य प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा उपस्थित होते रहे। राजकोट, कांडला राज्य मार्ग पर 40 फीट ऊंचे स्वामी दयानन्द द्वार का उद्घाटन, विश्व दर्शनीय यज्ञशाला का उद्घाटन आपके कर कमलो द्वारा हुआ, प्रतिवर्ष इस अवसर पर लाखों रूपये की राशि दान स्वरूप आपके परिवार द्वारा प्राप्त होती रही।

आपके अकस्मात् निधन पर टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल एवम् अजय सहगल निवास स्थान पर उपस्थित हुए एवम् ओ३म् ध्वज को आपके पार्थिक शरीर पर ओढ़ाया गया। इसी अवसर पर एमेटी शिक्षण संस्थाओं के संस्थापक डॉ. अशोक चौहान, डॉ. अमिता चौहान (चेयरपर्सन ऐमिटी स्कूलम) एवम् ए.के.सी ग्रुप्र के डायरेक्टर श्री आनन्द चौहान जी ने भी उपस्थित हो अपनी संवेदनाएं प्रकट की। इस अवसर पर सर्व श्री धर्मपाल आर्य, राजीव आर्य, अरूण वर्मा, सुरेन्द्र रैली, विश्वामित्र ठुकराल ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान
आर्यपुत्र डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा
स्व. श्री बृजमोहन लाल मुंजाल जी के निधन पर दिया गया वक्तव्य

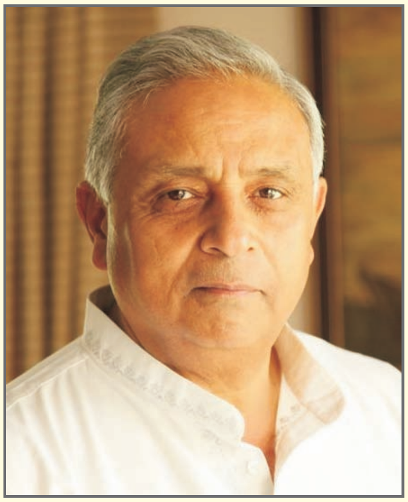

डॉ. पूनम सूरी जी
प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति

श्री बृजमोहनजी मुंजाल नहीं रहे, यह जानकर हृदय को एक गहरा आघात पहुंचा है। मुंजाल जी के स्वास्थ्य को लेकर जानकारी तो मिली, लेकिन अस्वस्थता के चलते मैं उनके दर्शन नहीं कर सका-इसका खेद मुझे उम्र भर रहेगा। श्रद्धेय मुंजालजी हमारे आदर्श पुरुषों में से एक रहे जिन्होंने जीवन की भौतिक उपलब्धियों तथा अध्यात्म और परोपकार के बीच एक अपूर्व संतुलन बनाए रखा। विनम्रता, सादगी और जीवन-मूल्यों के मजबूत स्तंभो पर आधारित उनका चरित्र जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति के लिए एक दीपस्तंभ बनकर प्रज्ज्वलित रहेगा। सन् 1923 में जन्मे श्रद्धेय बृजमोहनजी मुंजाल ने 92 वर्ष की अपनी जीवन-यात्रा में उद्यमशीलता, मानवीय संबंधों, उदारता, ईश्वर विश्वास और देश-भक्ति के विश्व-व्यापी कीर्तिमान स्थापित किए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति मुंजालजी के मन में अगाध श्रद्धा थी, आर्य समाज की मान्यताओं और इसके कार्यक्रमों में अटूट विश्वास था। मुझे महात्मा आनन्दस्वामी जी के साथ उनके संबंधों का स्मरण आता है। श्रद्धेय मुंजालजी उनके साथ आर्य समाज और आध्यात्मिकता को लेकर गंभीर चर्चाएं किया करते थे। आर्य समाज, बसंत विहार, में उनका अक्सर आना-जाना रहता था और इस समाज का भौतिक विकास तथा उसके समाजसेवी कार्यक्रमों को दिशा देने में उनकी दूरदृष्टि और दानशीलता सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मुंजाल परिवार श्री बृजमोहन मुंजालजी के आदर्शो, उद्देश्यों और सरोकारों को निभाते हुए उनकी छवि को विश्वव्यापी बनाए रखने के साथ-साथ आर्य समाज के प्रति उसी प्रकार का सौहार्द और विश्वास बनाए रखेगा।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति की ओर से शोकग्रस्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएँऔर सहानुभूति व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह इस परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पूनम सूरी

डॉ. पूनम सूरी

बेफिक्र ही फकीर

यह प्रश्न कई बार आपके सामने आया होगा कि इस संसार में सबसे सुखी कौन? पंजाबी में एक मशहूर कहावत है 'वह सुखी जिसके जायें सुखी' अर्थाथ जिसके बच्चे सुखी वह सुखी कुछ लोग धन दौलत का होना ही सुखी होने का पर्याय मानते है लेकिन आप अपने आस पास देखे कि क्या धनवान व्यक्ति सुखी प्रतीत होता है। कदापि नहीं। तो सुखी कौन? दार्शनिक कहता है कि जो निष्बेफिक्र है वह सुखी, जिसे किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं वह फकीर मन वाला ही सुखी है। आप पूछेगें कि सुखी होने के लिए फकीर बनना आवश्यक है?

आप पहले समझे फकीर या फकीरियत क्या है? फकीर का मतलब किसी विशेष वेष या बाने या धर्मपंथ, सम्प्रदाय विशेष से नहीं? अपितु जिस किसी व्यक्ति के जीवन में कोई फिक्र नहीं होती, जो चिन्ता रहित हो, जिसकी सांसारिक इच्छाएं मर जाती है, वही सच्चा फकीर है। जिस व्यक्ति विशेष ने यह जान लिया कि दु:ख, चिन्ता, परेशानियां तो जीवन में आती जाती है उसे स्वीकार कर बेफिक्र होकर जियो रो पीट कर दु:खी होकर, यह आप पर निर्भर है। जिसने इस भेद को समझ लिया वह ब्रह्मचर्य में, गृहस्थ में, वानप्रस्थ में सब जगह फकीर है। ऐसे व्यक्ति के मुख्य मण्डल पर एक तेज, एक मुस्कुराहट, एक सादगी, एक शान्त चेहरा दिखेगा। आपका उससे बात करने का दिल करेगा। उसका शरीर एक सकारात्मक तरंगे छोड़ रहा होगा। वही सच्चा फकीर है। फकीरी से बड़ा कोई सुख नहीं लेकिन ऐसा फकीर होना कोई आसान काम नहीं। दृढ़ संकल्प, संसार के सारे प्रपंचो, रगड़ा-पट्टी और तेरी-मेरी से मुक्त होने वाला ही फकीर हो पाता है जो सिर्फ आत्मा के गुणों का प्रकटीकरण करने और अन्त में लीन होने की साधना का पराक्रम करता है वही फकीर कहलाता है।

मस्त रहो
पर व्यस्त रहो
अस्त-व्यस्त मत रहो

क्या गृहस्थ में रहकर भी व्यक्ति फकीर हो सकता है? बिल्कुल हो सकता है। अपने दृष्टिकोण, सोच और विचारधारा में थोड़ा परिवर्तन लाकर हम खुद को बदल सकते है। व्यक्ति जीवन में छोटे-छोटे सत्क्रम, शुभ संकल्प की पहल करके अपने जीवन में बदलाव ला सकता है। कब जीवन में यू-टर्न आ जायेगा पता भी नहीं चलेगा। हम सत कार्यो के लिए उत्साहित नहीं होते अपितु दुष्कर्मो के लिए आकर्षित हो व्यक्तियों से प्रतिर्स्पधा रखते हुये ईर्ष्या भी करते है। यही कारण है कि हमारा जीवन उत्थान व स्वकल्याण के लिए उदासीन हो जाता है। जीवन में दु:ख/अशान्ति का मुख्य कारण यही है, हम अपनी अच्छाइयों को भूल उस राह की और जाना चाहते है जिससे आत्मिक सुख मिलना सम्भव नहीं, क्षणिक सुख हो सकता है, लेकिन स्थाई सुख नहीं। हमारी छोटी सी गलती, हमारा छोटा सा अवगुण, मामूली क्रोध जीवन में कब भयंकर स्थिति प्रकट कर दे पता नही और यह पतन के छोटे-छोटे अवगुण आगे चल कर विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेते है। एक ऐसा वृक्ष जिस पर फल नहीं लगते, जैसे छोटा सा घाव नासूर बन जाता है, सिगरेट का एक जलता हुआ टुकड़ा कितनी बड़ी आग का कारण बन जाता है, थोड़ा सा लिया ऋण व्यापार का दिवाला निकाल सकता है और सबसे बड़ा उदाहरण छोटा सा अपमान महाभारत पैदा कर देता है।

फकीर बनने के लिए इन छोटी बुराईयों से छुटकारा पाना होगा जो सम्भव है। अगर संकल्प दृढ़ है तो, अपने जीवन को अच्छा/सुखी बनाने के लिए हर दिन, हर पल शुभ और मंगलकारी है। केवल संसारिक वस्तु/पदार्थो से अपना लगाव को घटाते जाये ताकि एक दिन अपनी फकीरी में रूकावट मानते हुए पूर्ण रूपेण ठुकराया जा सके। याद रखे-फकीरी जैसा जीवन जीने वाले ही मस्ती के साथ शांत चित में रमण करते हुए मुक्ति की ओर बढ़ते है। आप भी अपना उत्साह जगाएं, संसार के परिग्रहो को छोड़ते हुये स्वार्थी रिश्तों से परे हटे, अपने को अपने में खोजे, फकीरीपन का आनन्द एक दिन खुद ही प्रकट हो जायेगा। फकीरीपन महसूस करने की वस्तु है। बस इसे आने का रास्ता साफ रखे, सुख और आनन्द आपसे दूर नहीं!

अजय टंकारावाला

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी बोधोत्सव 06, 07, 08 मार्च 2016 को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 31 जनवरी 2016 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। यदि प्रकाशन सामग्री टाईप की हुई हो तो सुविधाजनक रहेगा इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय सहगल, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658, ए-419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

टंकारा में बोधोत्सव 2016 का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार 06, 07, 08 मार्च 2016 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। अपने आने की पूर्व सूचना शीघ्र अति शीघ्र टंकारा ट्रस्ट उपकार्यालय आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर लिखित रूप में अवश्य भेजें जिससे व्यवस्था की जा सके।

पंच महायज्ञ पाँच कष्टों को काटने वाले होते हैं

❏ खुशहाल चन्द्र आर्य

हमारे त्यागी, तपस्वी, विद्वान, ऋषि-मुनियों ने हर व्यक्ति को विशेष कर गृहस्थी को पाँच महायज्ञ नित्य सुचारु रूप से करने का आदेश दिया है। इन पाँच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो है ही पर विशेष लाभ यह है कि ये पाँचों यज्ञ पांच किस्म के दुःखों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यानि इन यज्ञों से दुःखों व कष्टों का निवारण होता है। वे पाँच महायज्ञ है। (1) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ (3) पितृयज्ञ (4) बलिवैश्व देवयज्ञ (5) अतिथि यज्ञ है। आत्मिक, शारीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से बढ़ती दूरिया। पाँच यज्ञों से पांच कष्ट कैसे दूर होते हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहां देते हैं।

1. ब्रह्मयज्ञः ब्रह्मयज्ञ, आत्मा के दुःखों व कष्टों का निवारण करके, आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्मयज्ञ का तात्पर्य है सन्ध्योपासना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रातः व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आये विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी जगह प्रेम, दया, करूणा, परोपकार की भावना व आनन्द का संचार होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना उपासना का तात्पर्य है कि हम किसी एक शान्त व स्वच्छ स्थान पर मन को सब ओर से हटाकर चित से अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डालकर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानि प्रशंसा करें कि हे ईश्वर! आप कितने सामर्थ्य वान् हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार भी आप ही करते हो और जीवों को उनके किये अच्छे व बुरे कर्मो का फल भी आप ही अपनी न्याय अवस्था से किस प्रकार देते हो यह ध्यान देना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सम्मानता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठकर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्म यज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुणदया, करूणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र बनाता है। ब्रह्म-यज्ञ में सन्ध्योपासना के साथ-साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाना है और वेदों के अनुसार चलकर मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसको पाने के लिए जीव अच्छे धर्म करते हुए मनुष्ययोनि में आता है।

2. देव यज्ञः यह महायज्ञ मनुष्य को शरीर स सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है, हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पाँच जड़ देवता हैं, जिनके नाम है, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख है। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वास्थ्य रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और उस भोजन का पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियों की पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिधा आदि डाली जाती है। उसकी सुगन्ध अग्नि में डालने से कई गुण बढ़ जाती है और वह सुगन्ध जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाईड्रोजन व नाईड्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है यानि शरीर में जो रोग व बीमारिया रहती हैं, वे दूर हो जाती है और शरीर स्वस्थ्य हो जाने से मनुष्य का जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देवयज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

3. पितृ यज्ञः पितृ-यज्ञ से परिवार व गृहस्थ सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा तथा उनकी सभी आवश्यकताएं पूर्ण होगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुओं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं, परन्तु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता-पिता व वृद्ध जनों की श्रद्धापूर्वक सेवा, सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना सम्भव है। मरने के बाद करना एक अन्ध विश्वास ही है।

4. बलिवैश्व देव यज्ञ- इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव हम पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्व देव यज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

5.अतिथि यज्ञः घरों में अज्ञानता से जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में वैर भाव रहता है और परस्पर लड़ते झगड़ते रहते हैं, अतिथि यज्ञ से ये सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घर पर साधु, सन्त, सन्यासी, विद्वान, वानप्रस्थी व गुरुकुलों के आचार्यो व ब्रह्मचारियों का आना-जाना बना रहना। जिस गृहस्थ में सन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर-सत्कार होगा, उनका घर में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे, तो उस घर में परस्पर का विरोध कटुता कभी-कभी नहीं रहेगी कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है। जब सन्यासियों और विद्वानों के सद्उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जायेगी और परस्पर का प्रेम व सहृदयता का वातावरण बन जायेगा, तब पति-पत्नि, सास-बहु, भाई-भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जायेगा। इस प्रकार इन पाँच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पाँच दुःखों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेष कर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पाँच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स 180 महात्मा, गान्धी रोड, कोलकत्ता मो. 9830135794

दिल्ली से राजकोट हवाई जहाज सेवा प्रारम्भ

ऋषि भक्तों को यह जानकर खुशी होगी कि अब **दिल्ली से राजकोट** के लिए **एयर इण्डिया** की **सीधी फ्लाईट** आरंभ हो गई है। दिल्ली से प्रतिदिन एयर इण्डिया फ्लाइट **AI9631** प्रातः 5.50 बजे राजकोट के लिए प्रस्थान करती है। राजकोट से टंकारा मात्र 40 कि.मी. पर है इसी तरह **राजकोट से दिल्ली** के लिए प्रतिदिन **एयर इण्डिया** फ्लाइट **AI9632** प्रातः 8:25 बजे प्रस्थान करती है। टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते है।

स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत स्वामी श्रद्धानन्द

❒ महाशय धर्मपाल

अपनी आत्मकथा में स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वयं को 'कल्याण मार्ग का पथिक' बताया था। सचमुच इनकी जीवन कथा अधः पतन के गहरे गड्ढे से निकल कर अपने जीवन को धर्म, समाज और देश के लिए बलिदान करने की ज्वलन्त कहानी है। अपने किशोर और युवाकाल में कतिपय परिस्थितियों के कारण वे अपने मार्ग से भटके तो सही, किन्तु अपनी त्रुटियों तथा कमियों पर निरन्तर विजय पाने की चेष्टा भी निरन्तर चलती रही और अन्ततः वह श्रेय के मार्ग पर चलने की पात्रता अर्जित कर सके। उनके जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन तो तब आया जब 1879 में उन्हें ऋषि दयानन्द के तेजस्वी एवं गरिमामय व्यक्तित्व के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उन्होंने स्वीकार किया है कि तब उन्हें अपने अनिश्वरवादी होने का बड़ा गर्व था। यूरोप के तत्वविदों तथा दार्शनिकों के अध्ययन ने ईश्वर के प्रति उनके विश्वास को दोलायमान कर दिया था, किन्तु महान् आस्तिक महर्षि से समय-समय पर वार्तालाप एवं शंका समाधान ने उनके हृदय में व्याप्त संशय तथा भ्रम को नष्ट कर दिया। ऋषि के मुख से उन्होंने उपनिषद् के निम्न मन्त्र को सुना-

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेनलभ्यस्स्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥

परमात्मा की प्राप्ति, भाव भरे प्रवचनों को सुनने से नहीं होती और न बहुश्रुत होने या तीव्र मेधा प्राप्त करने से। परमात्मा तो जिसे अपने भक्त के रूप में वरण कर लेता है उसी के समक्ष अपने स्वरूप का प्रकाशन करता है। यही वह आर्ष वाणी थी जिसने युवक मुंशीराम को आस्तिकता की डगर का राही बनाया था। जब तक मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द को निकट से नहीं देखा और न जाना तब तक तो भारत के सन्यासी वर्ग के प्रति उनकी धारणा यही थी, कि ये भिक्षोपजीवी लोग समाज पर भार के तुल्य हैं।

दयानन्द के इस सम्पर्क ने उनके जीवन को श्रेयान्मुख कर दिया। जीविकोपार्जन के लिए उन्होंने वकालत का पेशा अपनाया किन्तु धर्म और समाज की सेवा ही उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य रहा। जिन नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में उनकी आस्था रही, उन्हें स्वयं के जीवन में क्रियान्वित करने तथा अन्यों को अपनाने की प्रेरणा देने में वे सदा तत्पर रहें। इसी प्रकार जिन विचारों और कार्यक्रमों को वे महत्वहीन समझते रहे, उन्हें त्यागने में भी संकोच नहीं हुआ। लाहौर में रहते समय वे आर्यसमाज तथा ब्रह्मसमाज के प्रति समान रूप से आकर्षित हुए थे, किन्तु जब 'सत्यार्थ प्रकाश' के अध्ययन ने उन्हें पुनर्जन्म के प्रति पूर्ण विश्वासी बना दिया, वे आर्यसमाज के प्रति समर्पित होकर वैदिक धर्म के अनन्य प्रचारक बन गए।

श्रद्धानन्द का सार्वजनिक जीवन निरन्तर विकसित होता रहा किन्तु उनकी धुरी आर्यसमाज ही रही। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में उन्होंने आर्यसमाज के माध्यम से धर्म जागृति फैलाई। लाहौर और जालंधर दोनों उनके कर्मस्थल रहे जहाँ से उन्होंने वैदिक ज्ञान को प्रसारित किया। अपने प्रवचनों और शास्त्रार्थों के द्वारा उन्होंने पंजाब की जनता तक वेदों की कल्याणकारी विचारधारा को फैलाया। लाहौर में रहकर वे आर्यसमाज के गौरवशाली नेता बने और उन्होंने अनेक चुनौती भरे प्रश्नों का समाधान किया। जब मांसाहार के निषेध तथा पश्चात्य शिक्षा को महत्व न देने का सवाल उठा तो उन्होंने अपने चारित्रिक बल, सिद्धान्त, निष्ठा तथा वैदिक धर्म के प्रति अनन्य प्रेम के कारण कठिनाईयाँ पाई। दलीय संघर्ष की इस अग्नि में तप कर लाला मुंशीराम का व्यक्तित्व कुन्दन की भाँति चमका और वे न केवल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपितु सम्पूर्ण आर्य जगत् के बेताज बादशाह बन गए।

जिस समय वकील लाला मुंशीराम ने लाहौर आर्यसमाज की सदस्यता का फार्म भरा था, उसी समय वयोवृद्ध लाला सांईदास ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था-"आज एक नई शक्ति का प्रवेश समाज में हुआ है। यह तो भविष्य ही बताएगा कि यह आर्यसमाज को तारेगी या डुबाएगी।" श्रद्धानन्द चरित का अनुशीलन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, कि उन्होंने दयानन्द की शिक्षाओं को फैलाने में अपने सम्पूर्ण जीवन की आहुति दे दी थी। आज आर्य समाज के सवा सौ वर्ष के इतिहास में दयानन्द के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द के तुल्य कोई ऐसी हस्ती नहीं दिखाई देती जिसने धर्म, समाज तथा राष्ट्र की सेवा में स्वयं को सम्पूर्ण रूप से समर्पित किया हो।

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पद पर पर्याप्त समय तक रहने के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द ने अनुभव किया कि अब इस विद्यालय की प्राचीरों से बाहर निकल कर देश की स्वाधीनता के संग्राम में भाग लेना चाहिए। यों तो वे राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में बहुत पहले से ही जाने लगे थे, किन्तु दक्षिण अफ्रीका से कर्मवीर बैरिस्टर मोहन दास कर्मचंद गांधी को सर्वप्रथम 'महात्मा' कहकर उन्होंने ही पुकारा था और गुरुकुल के प्रांगण में इस महापुरुष का भावभीना स्वागत कर उसे अभिनन्दन पत्र भेंट किया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने समझ लिया था कि देश के लिए कुछ करने का समय अब आ गया है। 1917 से 1922 तक के पाँच वर्ष उन्होंने राष्ट्रदेव की सेवा में समर्पित किए। यही वह समय था, जब दिल्ली के चाँदनी चौक में उन्होंने गोरे सिपाहियों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी और निर्भीक स्वर में कहा था कि भारत की जनता पर गोली चलाने से पहले उन्हें इस सन्यासी की छाती को छलनी बनाना होगा। असहयोग और सत्याग्रह का यही समय था, जब दिल्ली के राष्ट्रभक्त मुसलमान उन्हें जुम्मे की नमाज के समय जामा मस्जिद में ले गए और उस धर्म स्थान की सर्वोच्च वेदी पर बैठ कर उन्होंने निखिल प्राणी जगत् के माता-पिता परमेश्वर की इस मन्त्र से स्तुति की थी।

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अघा ते सुम्नमीमहे।

इस वैदिक प्रार्थना के पश्चात् उन्होंने समस्त देशवासियों के परस्पर भ्रातृभाव में बँधकर स्वयं को देश के लिए बलिदान होने की प्रेरणा दी। राजनीति में धर्म और नैतिकता को समाविष्ट करने पर उन्होंने बल दिया क्योंकि उन्होंने ही सत्याग्रह को 'धर्म युद्ध' कहा था, तथा जिन्हें अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष का पद स्वीकार करने के लिए अनुरोध करते समय महात्मा गांधी ने लिखा था-"यदि आप स्वागत समिति के सभापति हो जाएंगे तो आप कांग्रेस में धार्मिक भाव पैदा कर सकेंगे। जलियाँवाला हत्याकाँड के पश्चात् जब लोगों को पंजाब में कांग्रेस के अधिवेशन का होना असम्भव जान पड़ता था, उस समय अपनी

कार्यक्षमता का परिचय देकर स्वामी जी ने उसे सफल कर दिखाया। राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए समर्पित स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया। कांग्रेस मंच से दिया गया यह पहला हिन्दी का स्वागत भाषण था। इससे पहले वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता कर चुके थे।

कांग्रेस के कार्यक्रमों में स्वदेशी का महत्व, नारी जागरण, गौसेवा, अछूतोद्धार, मदिरा का बहिष्कार तथा हिन्दी प्रचार जैसे रचनात्मक कार्य स्वामी जी की रूचि के थे। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में उनकी कितनी प्रबल आस्था थी यह हम उनके उस पत्र में देखते हैं, जो उन्होंने 25 सितम्बर 1920 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान लाला रामकृष्ण को लिखा था। इसमें उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया था, ''इस समय में मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है। यदि यह आन्दोलन असफल हुआ तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न पचास वर्ष पीछे जा पड़ेगा। यह जाति के जीवन और मृत्यु का प्रश्न हो गया है।'' वे सर्वात्मना कांग्रेस में गए और गुरु का बाग सत्याग्रह में भाग लेकर कारागार की यातनाओं को भी सहा। किन्तु जब उन्होंने अनुभव किया कि कांग्रेस की मुस्लिम तोषिणी नीति के शुभ परिणाम नहीं निकलेंगे तो उन्होंने इस संस्था से किनारा कर लिया। उन्हें प्रथम अनुभव तो तब हुआ जब काकीनाड़ा कांग्रेस के अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए मौलाना मोहम्मद अली ने अछूतों का सवाल खड़ा किया और सात करोड़ दलितों को हिन्दू और मुसलमानों में बराबर बाँट लेने की धृष्टतापूर्ण बात कही। इस पर स्वामी जी ने सिंह गर्जना करते हुए कहा-''राम और कृष्ण की इन प्यारी सन्तानों को परस्पर बाँटने की बात कहना देश की एकता को क्षति पहुँचाना है और यह त्रिकाल में भी संभव नहीं है। अछूत प्रथा को जन्म देने में निश्चय ही हिन्दू जाति से भयंकर भूलें हुई हैं, किन्तु उसका प्रायश्चित भी हम ही करेंगे।'' इसके बाद उन्होंने कांग्रेस से अछूतोद्धार का कार्यक्रम अपनाने के लिए कहा किन्तु इस कार्य के संयोजक बना देने पर भी उन्हें हाईकमाण्ड से पूरा सहयोग नहीं मिला।

अन्ततः उन्होंने महाकवि रवीन्द्रनाथ की 'एकल चलो' की नीति अपनाई। अब वे अपने कार्यक्रमों के लिए आर्यसमाज के लोगों पर भी निर्भर हो चले और महात्मा हंसराज आदि आर्य नेताओं के सहयोग से शुद्धि और संगठन के कार्य में जुट गए। उन्होने इन दोनों कार्यक्रमों को देशव्यापी बनाकर दिखा दिया कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी ही धर्म और समाज की भलाई के लिए कुछ कर सकते हैं। इसी शुद्धि के लिए उन्हें स्वयं का भी बलिदान करना पड़ा क्योंकि असगरी बेगम की शुद्धि को लेकर मतान्ध मुसलमान उनके शत्रु बन गए और एक हत्यारे अब्दुल रशीद ने 23 दिसम्बर 1926 को पिस्तौल की गोलियों के प्रहार से उन्हें अमर हुतात्मा बना दिया। कर्मयोगी श्रद्धानन्द का जीवन जितना शानदार था, उनकी मृत्यु उतनी ही गौरवशालिनी थी, जिस पर महात्मा गाँधी को भी ईर्ष्या करनी पड़ी। पं. जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें निर्भीकता और साहस की प्रतिमा बताया। उनके बलिदान को इतना समय बीत जाने पर भी स्वामी श्रद्धानन्द के गरिमामय जीवन तथा त्यागपूर्ण आदर्शो की चमक थोड़ी भी फीकी नहीं हुई है।

-प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, 15 हनुमान रोड, दिल्ली-01

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

भक्ति की अभिव्यक्ति प्रसन्नता या मुक्ति

❐ श्री देवनारायण भारद्वाज

'भक्ति'-भज सेवायाम् अर्थात् भजन करना, सेवा उपकार करना-यह संभव होता है-उपासना से अर्थात् समीप आसन लगाने या बैठ जाने से जैसे अग्नि के निकट बैठने पर उसका तापगुण प्राप्त होता है, मनुष्य उष्णता अनुभव करता है। लोहा तो अग्नि की भांति ही लाल और गर्म हो भी जाता है। इसके भी तीन आयाम है: (1) 'स्तुति'-ईश्वर का गुण कीर्तन श्रवण और ज्ञान होना, इसका फल ईश्वर के प्रति प्रीति में प्रकट होता है। (2) 'प्रार्थना'-अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होता हैं, उनके लिए ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है। 3. 'उपासना'-जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक, अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है, ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् ईश्वर है, ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहलाती है, इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि हैं। इस क्रम से की गयी ईश्वर की भक्ति से जो शक्ति प्राप्त होती है, उसकी अभिव्यक्ति प्रसन्नता में होती है। मन्त्रद्रष्टा ऋषि आत्रैय ने इसके लिए एकक्रम का अनुशीलन किया है। यथा

ऊर्जा मित्रो वरूण: पिन्वतेडा:।
पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र।। (सामवेद 455)

आचार्य पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार ने इस मन्त्र के द्वारा अपने जीवन को स्नेह व व्रतों के बन्धन वाला बनाने का सन्देश दिया है। जिसे मैं स्वचिन्तनधारा के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। इसमें मानव जीवन के पांच सोपान इंगित किये गये हैं यथा 1.ऊर्जा (शारीरिक शक्ति), 2. मित्र (प्रिय प्राण प्रगति), 3. वरूण (जल की भाँति सरस वरणीय व्रत धारणा), 4. इडा (वेद वाणियों के समान सटीक चिन्तन), 5. इषम् (इषे, इच्छायाम्,अन्तिम अभिलाषा प्रसन्नता) इन्हीं को आध्यात्मिक भाषा में अन्नमय कोश, प्राणमयकोश, मनोमयकोश, विज्ञानमयकोश और आनन्दमयकोश की संज्ञा से विहित किया जाता है। इन पंचकोशों के संचरण से मानव को पंचरत्त प्राप्त होते हैं क्रमश: ऊर्जा,उत्साह, उत्सुकता, उत्पकर्ष और उल्लास अर्थात् प्रसन्नता। पगपग पर प्राप्त होने, वाली प्रसन्नताओं का संघात ही मुक्ति का प्रभात बन जाता हैं विशिष्टरूपेण उल्लासमय व्यक्ति निर्माण के लिए ऋषि 'विरूप आंगिरस' से पूछते हैं तो वे बोल पड़ते हैं:-

ऊर्जा नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम्।
अस्मिन् यज्ञे स्वधरे।।

हम उस प्रभु का स्मरण करें जो हमारी शक्तियों को क्षीण नहीं होने देते, उन्नतिपथ पर आगे ले चलते हैं व पवित्र ज्ञान, दीप्ति प्राप्त कराते हैं (सामवेद 1712)। महर्षि दयानन्द ने भी यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में आये 'इर्ष व ऊर्जे' का तात्पर्य अन्नादि उत्तम पदार्थो व विज्ञान की इच्छा, तथा पराक्रम अर्थात् उत्तम रस बताया है। विस्तीर्ण सरोवर के समीप देशाटन के लिए बहुत सारे व्यक्ति उपस्थित थे, उनमें से एक दम्पती का नन्हा शिशु खेलते-खेलते सरोवर में गिर गया। माता-पिता व अन्य कोई तैरना नहीं जानते थे, वे दोनों सहायता के लिए पुकारने लगे, कोई आगे नहीं बढ़ा, वहाँ पर एक बलशाली तैराक युवक भी था, किन्तु वह भी बच्चे को बचाने के लिए तैयार नहीं हुआ, तब धोखे से एक वृद्ध ने उसे पानी में धक्का दे दिया। लोगों ने उसे प्रेरणा दी-तुम पानी में पहुँच ही गये हो तो बच्चे को बचाकर ले आओ। उसने वृद्ध की बात मानी और वह बच्चे को उठाकर ऊपर ले तो आया, माता-पिता बच्चे को पाकर प्रसन्न हुए, किन्तु उस युवक ने शोर मचाकर पूँछना प्रारम्भ कर दिया- ''मुझे सरोवर में किसने धक्का दिया, बताओ मैं उसे देख लूँगा।'' उसे अपनी इस शारीरिक ऊर्जा एवं कार्य की उपलब्धि से कोई उत्साह नहीं मिला। वह ऊर्जा ही क्या, जिससे उत्साह का सृजन न हो। सड़क के किनारे-किनारे एक वृद्ध चले जा रहे थे। ठीक उनके पास ही बस रूकी और उस बस में से उनसे भी अधिक वृद्ध व्यक्ति उतरते हुए गिरते गिरते बचा, क्योंकि उसने पद-यात्री वृद्ध की बाँह पकड़ ली थी। बसयात्री वृद्ध गिरने से बच गया। पदयात्री वृद्ध को अपनी किंचित् शेष बची शक्ति व अपनी बाँह पर गर्व हुआ, जिससे वह वृद्ध बच सका। उसकी अल्प ऊर्जा ही सही, किन्तु उसके उत्साह का कारण बन गयी। यही नहीं वह जब-जब इस घटना को याद करता तो उत्साह से भर जाता।

यही उल्लास सभी छोटे-बडों की उत्सुकता का उत्स बन जात है। वर्तमान में विश्वस्तरीय सर्वोच्च वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंस हैं। उनके शरीर का कोई अंग काम नहीं करता है, किन्तु उनका मस्तिष्क बिल्कुल विश्राम नहीं करता है। उनके जीवन का यही उत्साह है, जो नये-नये अनुसंधानों के लिए प्रेरित करता रहता है। भारत के द्वितीय प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री के शासन काल में दो भयंकर आपदायें देश में उत्पन्न हुई। प्रथम-अन्न का अभाव और द्वितीय भारत पर पाकिस्तान द्वारा थोपा गया युद्ध। आचार्य चाणक्य की भाँति इन दोनों आपदाओं के मूल कारण पर शास्त्री जी ने उत्सुकता पूर्ण अन्वेषण किया और उनका एक ही नारा 'जय जवान जय किसान' देश को उत्कर्ष की ओर ले गया।

कोई भी व्यक्ति जीवन में भौतिक सम्पदा चाहे कितनी ही अर्जित कर ले, किन्तु वह कुछ काल तक सुखाभास तो कर सकता है, किन्तु उसे उल्लास या आनन्द का वरदान तो दुर्लभ ही रहता है। पर सच्चरित्र व सदाचार का जीवन जीने वाला सामान्य निर्धन व्यक्ति अपने जीवन में उल्लास प्राप्त कर लेता है। किसी को राह दिखाकर, प्यासे को जल पिलाकर, भूखे को भोजन कराके, चिन्तातुर व्यक्ति दु:खी व्यक्ति से दो सान्त्वना के शब्दों को बोलकर आप उसे सुखी बनाते हैं और स्वयं आनन्दोल्लास के अधिकारी बन जाते हैं। एक-एक अंक जोड़कर अरबों की संख्या बन जाती हैं, उसी प्रकार इन्हीं छोटी-छोटी प्रसन्नता को जोड़कर आपको मोक्षानन्द का उल्लास प्राप्त हो जाता है। अपनी इन्हीं दैनन्दिन प्रसन्नताओं को संरक्षित रखने के लिए महर्षि दयानन्द ने सन्ध्योपासना में एक अद्‌भुत उपाय बताया है, वह है अपनी मनसापरिक्रमा करना अर्थात् सभी प्रत्यक्ष छहों दिशाओं पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नीचे, ऊपर कहीं भी किसी से द्वेष न पालना, इसके स्थान पर प्रेम का प्रसार करना।

जीवन में लक्ष्य रखना और उसे प्राप्त करना अनुचित नहीं, किन्तु भौतिक लक्ष्यों से कहीं अधिक महान् उपयोगी पारमार्थिक लक्ष्य होना चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए अलग से कुछ साधना की जाये-यह

आवश्यक नहीं। महर्षि दयानन्द के अनुसार तो दैनिक पंच महायज्ञों के परिपालन से ही यह संभव है। हम साधनों को जुटाने में साधना को भूल न जायें। भक्ति की ''अमिधा, लक्षणा-व्यंजना'' अभिव्यक्ति पथपार्श्व में भवन निर्माणार्थ रोड़ी तोड़ने वाले तीन श्रमिकों ने स्पष्ट कर दी। एक सन्त ने तीनों से क्रमशः एक ही प्रश्न किया-'क्या कर रहे हो भाई?' पहले ने उत्तर दिया-''देख नहीं रहे-इस गर्मी में पसीना-पसीना होकर मर रहा हूँ।'' दूसरे ने उत्तर दिया ''क्या कर रहा हूँ-बच्चों के लिए रोजी-रोटी जुटा रहा हूँ।'' तीसरे ने गर्वपूर्वक उत्तर दिया ''मैं यज्ञ-मन्दिर का निर्माण कर रहा हूँ'' जहाँ परितोष प्रसादी के लिए यजमान भक्त देवताओं की प्रदक्षिणा करने आयेंगे, जिससे मेरे पसीने की आहुति भी चढ़ती रहेगी। नित्यप्रति की यही प्रसन्नता ही तो भक्ति, मुक्ति व प्रभुशक्ति की स्रोत रहती है।

- 'वरेण्यम' अवन्तिका प्रथम, रामघाट मार्ग, अलीगढ़-202001, उ.प्र.

धीरे-धीरे

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय
अंग्रेजी में भी कहते हैं
स्लो एण्ड स्टैडी, विन्ज् द रेस!
वृक्षों में फल भी, धीरे-धीरे ही आते हैं,
जल्दबाजी और हड़बड़ी से
काम बिगड़ने का डर रहता है!
ये सब जानते समझते हुए भी
हम अक्सर तड़ातड़ी में रहते हैं,
महीनों का काम दिनों में और
दिनों का काम घंटों में चाहते हैं,
न होने पर बौखलाते हैं
करने वाले को खरी खोटी सुनाते हैं,
शान्ति और धीरज भूल जाते हैं।

-ओमप्रकाश बजाज
विजय विला, 166-कालिंदी कुंज, पिपलिहाना, रिंग रोड, इंदौर-452018, मो. 09826496975

चलो टंकारा चलो

दीदार करें उस जगह को हम, जन्मा था ऋषिवर जहां।
चूमे उस मिट्टी को हम, खेला था ऋषिवर जहां।
उसकी यादों के तले, मन के आनन्द मिले।
चलो मिल सारे चलो, ऋषि के ग्राम चलो।
चलो टंकारा चलो
पूछें उन गलियों से हम, मेरा दयानन्द है आज कहां,
पूछें उस शिव के मन्दिर से, करे कुछ तो बयां।
आसू की धार कहे, मन की आवाज कहे
एक बार फिर से आजा, ओ ऋषिवर मेरे
चलो टंकारा चलो
सोतों को जगाने वाला, सो जायेगा सम्भव नहीं,
सत्य राह पर चलाने वाला, छोड़ जायेगा सम्भव नहीं।
जगाओ मन में दीप, ऋषिवर होगा समीप
चलो टंकारा चलो

- **राज लूथरा,** मो. 7290925303

सूचना
आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

आपको यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा विगत वर्षो में ग्यारह सफल आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किये जा चुके है। इसी क्रम में आगे देश के विभिन्न स्थानों पर निम्नानुसार परिचय सम्मेलन आयोजित किये जा रहे है।

12वां सम्मेलन : 6 दिसम्बर 2015, रविवार, आर्य समाज, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
13वां सम्मेलन : 3 जनवरी 2016, रविवार, वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, जिला-साबरकांठा (गुजरात)
14वां सम्मेलन : 14 फरवरी 2016 रविवार, आर्य समाज, रेलवे कॉलोनी, इन्द्रानगर, रतलाम (मध्य प्रदेश)
15वां सम्मेलन : 27 मार्च 2016, रविवार, आर्य समाज, बक्शीनगर, जम्मू (जम्मू-कश्मीर)

उक्त समस्त सम्मेलन सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजन में आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से आयोजित किये जा रहे हैं। इन सम्मेलनों में जहां महर्षि दयानन्द के कथनानुसार ''युवक-युवती अपने गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ही परस्पर विवाह करें'' का यह कार्य जहाँ वैदिक मिशन को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा वही आर्य परिवारों एवं युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने का भी एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

अतः आप से निवेदन है कि आप अपने आर्य समाज के परिक्षेत्र में आर्य परिवार के विवाह योग्य युवक-युवतियों से पंजीकरण फार्म भरवाकर इस पुनीत कार्य में सक्रिय सहयोग प्रदान करें। रजिस्ट्रेशन फार्म पूर्ण करवाकर सम्मेलन की तिथि से 15 दिवस पूर्व सम्मेलन कार्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 में शीघ्रताशीघ्र भिजवाने का श्रम करें।

संलग्न- (1) रजिस्ट्रेशन फार्म (2) सूचना प्रपत्र (3) विनम्र आग्रह-1

अर्जुनदेव चड्ढा
राष्ट्रीय संयोजक
आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन
मो. 09414187428

प्रकाश आर्य
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 09826655117

धर्मपाल आर्य
प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 09810061763

विनय आर्य
महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
मो. 09958174441

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें-महर्षि दयानन्द सरस्वती

सामाजिक कुरीतियां घातक हैं

❒ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

ऋषि दयानन्द ने अन्ध विश्वास व पाखण्डों पर पूरी तरह से प्रहार किए तथा समाज से कुरीतियों को मिटाने का पूरा प्रयत्न किया। इस क्षेत्र में उन्होंने किसी भी मत व पन्थ को नहीं छोड़ा उनका उद्देश्य था कि विश्व के लोग श्रेष्ठ बनें। सभी के मन व विचार समान हो, श्रेष्ठ हो, सभी विद्यावान हो, किसी का एक दूसरे से विरोध ईर्ष्या द्वेष न हो सब मिल कर रहें।

इसके लिए जो बुराइयां है उनका निराकरण अत्यन्त आवश्यक है किसान खेत में बीज बोता है, पौधे उगते हैं, फसल तैयार होती है यदि खेत में बीजारोपण के बाद खर-पतवार अधिक हो जाय तो फसल अच्छी नहीं होगी इसलिए खर पतवार अथवा जो घास आदि फसल के साथ-साथ हो जाती है उसे निकालना अत्यावश्यक होता है उसी प्रकार जीवन में जो कमी हमारे व्यवहार व संस्कारों में आ जाती हैं यह भी स्वर पतवार ही है इन्हें निकालना आवश्यक है समाज में बढ़ती कुरीतियां बुराइयां अन्ध विश्वास खर पतवार ही हैं जिन्हें निकाल देना चाहिए तभी समाज श्रेष्ठ हो सकेगा।

बुराइयों को सत्यासत्य के विवेक द्वारा विचार करके निकाल सकते हैं अब एक व्यक्ति कोई बुरा कार्य करता है वह उसे अपना कर्त्तव्य समझता है धर्म समझता है दूसरा अधर्म। यहां देखने की बात यह है कि ज्ञानी पुरुष विवेक द्वारा निष्पक्ष भाव से निर्णय ले सकता है यदि लोभ मोह पक्षपात में फंसा है तो निर्णय नहीं ले सकता उदाहरण के लिए कसाई का कार्य पशुओं को काटना है नित्यप्रति उन निरीह पशुओं की गर्दनों पर छुरा चलाता है। यहां सत्यासत्य व विवेक द्वारा विचार किया जाय तो यह मानवता के विरूद्ध है पशु हत्या उचित नहीं किसी विद्वान ने कहा है कि हमें दूसरों के प्रति वही व्यवहार करना चाहिए जो हम दूसरों से अपने लिए चाहते है अतः हमें दूसरों पर छुरा नहीं चलाना चाहिए, हिंसा नहीं करनी चाहिए क्योंकि हम भी तो यही चाहते हैं कि हमारी गर्दन पर कोई छुरा न चलाया जाय हमें कोई न मारे। हम दूसरों के प्रति चाहे वह पशु है व मनुष्य वही व्यवहार करे जो हम दूसरों से अपने लिए अपेक्षा रखते हैं। वैसे भी मनुष्य को ईश्वर ने मांसाहारी नहीं बनाया है मांसाहारी जीवो के विशेष गुण हैं वह जिह्वा से पानी पीते हैं शाकाहारी मुँह से पानी पीते हैं, कुत्ता बिल्ली शेर तेदुंआ भेड़िया आदि मांसाहारी है जिह्वा बाहर निकाल पानी मुँह में ले जाते हैं और गाय भैंस भेड़ बकरी, ऊँट, हाथी, मुँह से पानी पीते हैं, चप चप करके नहीं पीते, मनुष्य भी मुँह से बिना चप चप किए पानी पीता है शाकाहारी है हिंसक जीवों के बर्त्तन दंत बड़े होते हैं, आंखे गोल होती हैं इस प्रकार से देखें तो पाएंगे कि मनुष्य शाकाहारी प्राणी है परन्तु अनेक लोग मांस खाते भी है तो पका कर खाते हैं कच्चा नहीं खा सकते जबकि मांसाहारी जीव कच्चा मांस ही दांतो से काट कर खा जाते हैं मनुष्य कच्चा मांस चबा कर नहीं खा सकता इसलिए मनुष्य को मांस नहीं खाना चाहिए जीवन सात्विक बनाना चाहिए।

एक परिवार ऐसा है जो भूत प्रेत झाड फूंक तान्त्रिक कार्यो में अधिक विश्वास रखता है बेटे की शादी को दो वर्ष हो गये कोई संतान नहीं हुई तान्त्रिक के पास पहुंचे तान्त्रिक ने दाढ़ी सिर के बाल बड़े-बड़े रखे हुए हैं, रूखे सूखे इधर उधर फैले हुए। माथे पर काला बड़ा तिलक पान में शूल काले कपड़े पहन अपनी कुटिया पर बैठा हुआ सामने मनुष्य की खोपड़ी रख मुँह से ऊँ भट ऊँ भट् की तेज आवाज निकालता हुआ आंखे फाड़ कर विशेष आकृति बना चारों ओर घुमा कर आए हुए अपने ग्राहकों को आकर्षित करता है किसी को सन्तान होने का आशीर्वाद देता है किसी के ऊपर बताता है कि जिन्न आया है अथवा घर का कोई मर गया था वह आया है या कोई देवता आया है बोलता है कि फलां देवता नाराज है उसके लिए शराब मुर्गी आदि चाहिए रूपये पैसे मांगता है किसी की भैंस चोरी हुई किसी के यहां डाका पड़ा किसी का बालक अपहृत हुआ। किसी की लड़की व लड़का घर छोड़ भाग गए तान्त्रिक सभी की समस्याओं को सुनता और ऐसा बोलता जैसा कि वह सत्य कह रहा हो परन्तु ऐसा सब सत्य नहीं लोगों को भ्रमित किया जाता है यह पाखण्ड अन्ध विश्वास खर पतवार की भांति गली-गली अब भी फैल रहा है भारत में कई स्थानों पर तो तान्त्रिकों के ही मेले लगते हैं।

यदि तान्त्रिक कर्म, वैज्ञानिक होता तो चिकित्सालयों में मेडीकल आदि में चिकित्सा शास्त्र के साथ पढाई हुआ करती। हास्पिटलों में तान्त्रिक विशेषज्ञ की भी नियुक्ति हुआ करती परन्तु ऐसा नहीं क्योंकि तान्त्रिक कर्म सामाजिक बुराई है अपराधों का स्रोत है दुष्कर्म है अवैज्ञानिक है तान्त्रिक लोग बच्चों आदि की बलि जैसे दुष्कर्म कराते पकड़े जाते हैं जब इन्हें अपने भविष्य का पता नहीं तो दूसरों का भविष्य कैसे बता सकते हैं तान्त्रिक लोग अनपढ़ व मूर्ख लोग ही होते हैं अपराधों को जन्म देते हैं किसी वेदादि शास्त्र का ज्ञान तो दूर नाम भी नहीं बता सकते, वेद का नाम भी जानते स्वाध्याय करते तो तान्त्रिक कर्म से दूर ही रहते और तान्त्रिक कर्मो का विरोध भी करते भोले भाले, अज्ञानी अनपढ़, अधिकतर स्त्रियां इनके जाल में फंस जाते हैं और अपना धन समय आदि बर्बाद कर बैठते हैं।

एक तान्त्रिक ऐसे ही खोए हुए अपहृत लोगों का चोरी आदि का स्थान पता व व्यक्ति को बताया करता था, कुछ लोग गाड़ी में बैठकर उसका पता पूछते हुए उन मुहल्ले में आए जहां वह बड़ी दाढ़ी वाला व्यक्ति रहता था वह लोग मुझसे मिले कि अमूक तान्त्रिक कही रहता है मैंने पहले उनसे कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि लड़का घर से चला गया है उसका पता पूछना है मैंने कहा क्या आप तान्त्रिकों पर विश्वास करते हो वह बोले किन्हीं ने बताया है मैंने कहा एक कार्य करना उस तान्त्रिक से कहना मुँह मांगा इनाम देंगे उस लड़के को पकड़वाने हमारे साथ चल यदि चले तो बात को सत्य समझना वह उसके पास गए उसने कहा बालक पश्चिम दिशा में 100 कि.मी. की दूरी पर है कुछ लोगों के पास है मुझे दिखाई दे रहा है।

उन लोगों ने कहा जब तुम्हें दिखाई दे रहा है तो तुम उस स्थान पर हमारे साथ चलो इस पर तान्त्रिक ने सिर हिला दिया हम साथ नहीं जाते। कुछ लोगों को विभिन्न क्षेत्र के अपहरण कर्त्ताओं के बारे में पता भी होता है तो अनुमान से बात भी देते हैं कि वह अपहरणकर्त्ता कहां कौन सी दिशा में हो सकता है यह भी हो सकता है ऐसे तान्त्रिकों का अपहरण से सम्पर्क भी रहता हो। अनेक गेरूए काले वस्त्र पहन धूनी रचाने का नाटक करते हैं इनमें अनेक लोग व्यभिधारी बलात्कारी सजा प्राप्त चोर, डाकू, दुष्कर्मी पापी अपराधी भी हो सकते हैं अब इनको सरकार से लाइसेन्स तो होता नहीं। न ही इनका पता ठिकाना अनेक लोग

भगोड़े होते हैं जो अनेक अपराधों में रहे हो पश्चात पूरे शरीर पर राख लपेट कर बड़ी-बड़ी जटाएं रख काला बड़ा टीका लगा काले कपड़े पहन ढोंग करते फिरते हैं फिर इनका सम्बन्ध भी अपराधियों से होता होगा।

आज गेरूए वस्त्रों का जो स्थान था इन ढोंगी अपराधी तान्त्रिकों अवैदिक अज्ञानी लोगों ने विकृत कर दिया है। प्राचीन काल में वेद के विद्वान होते थे, प्रकाण्ड पण्डित होते थे, ऋषि मुनि होते थे। आश्रम व वनों में रहते थे जहां सहस्त्रों छात्रों का पठन पाठन होता था संध्या हवन करते थे, वेद मन्त्रों का सस्वर उच्चारण होता था समाज में संस्कारों का प्रचार करते थे आज ऐसा वातावरण विकृत हो अन्ध विश्वास व पाखण्डों की ओर बढ़ रहा है।

ऋषि दयानन्द ने ऐसे अर्धारी तान्त्रिको पाखण्डियाँ का विरोध कर समाज को जागृत कर गुरुकुलों आश्रमों वेद ज्ञन की ओर ध्यान दिलाया। हमें बढ़ते हुए तान्त्रिकों के इस जाल (नेटवर्क) का विरोध करना चाहिए।

– चन्द्र लोक कॉलोनी खुर्जा, मो. 8979794715

इमली में औषधीय गुण भी बहुत हैं

❑ आभा जैन

अधिकांश फलों को खाने से पहले यह नहीं बताया जा सकता हैं कि उनका स्वाद कैसा है? यह उन फलों को खाने के बाद ही पता चलता हैं किन्तु देखने और खाने की बात तो दूर हैं जिसका नाम लेते ही खट्टे मीठे स्वाद की अनुभूति होने लगे ऐसे फल इने गिने ही होते हैं। ऐसे ही फलों में से एक फल है-'इमली'। वनस्पति विज्ञान में टेमरिन्डस इडिंका के नाम से जाने वाली इमली के पेड़ सम्पूर्ण भारत में पाये जाते हैं। इमली का पेड़ विशाल फैलावदार होता है। बल्कि यह वृक्ष न केवल अत्यंत उपयोगी फलों के कारण विशेष माना जाता है। यह एक मजबूत बाढ़ प्रतिरोधी फसलों एवं पशुओं को सुरक्षा प्रदान करने वाला वृक्ष भी होता है। गर्मियों में फूलने वाले इस वृक्ष के फूल हल्के पीले रंग में कुछ ललाई लिए होते हैं, इमली का फल पहले हरा, फिर भूरा होता है। इसका स्वाद खट्टापन लिये होता है।

इसका गूदा, छाल, बीज और पत्ते अत्यंत उपयोगी होते हैं। इमली क्षुधावर्द्धक, आहार-पाचक, उदर और शरीर की जलन दूर करने वाली वायु और कब्ज नाशक पित्त विकारों में लाभदायक, भांग के नशे, गांजे की बेहोशी और धतूरे के जहरीले असर पर बहुत कारगर उपाय हैं।

इमली के गूदे में पर्याप्त नमी रहती हैं। नमी के अलावा गूदे में टाटरिक अम्ल व पेक्टिन बी समुचित मात्रा में पाया जाता हैं। विटामिन सी से परिपूर्ण इमली का गूदा पाचक, शीतलता प्रदान करने वाला और रोगाणु अवरोधक होता हैं।

प्राय: लड़कियां व महिलाएं इमली खाने की विशेष शौकीन होती हैं। समोसा, कचौरी, दही बड़े, पानी बताशे आदि में इमली की चटनी और इमली का पानी प्रयोग किया जाता हैं। यह इनके स्वाद में विशेष बढ़ोतरी कर देती है।

औषधीय उपयोग

❑ फोड़े-फुंसी ठीक करने के लिए उन पर इमली का गूदा लगायें। गर्मी में अलाइंया होने पर इमली को पानी में पीसकर अलाइंयो पर लगायें। शरीर के किसी भी अंग में मोच आने पर इमली के ताजे पत्ते पीसकर कुनकुना लेप मोच वाले स्थान पर लगाये। ❑ इमली के पत्तों का रस बवासीर में लाभकारी होते हैं। इमली के पानी का सेवन खून साफ करता है। ❑ यदि किसी व्यक्ति ने शराब का सेवन अधिक कर लिया है तो उसे पकी इमली का गूदा मसलकर पानी के साथ पिला दें। इससे नशा दूर हो जाता है। भांग का नशा भी दूर हो जाता है। ❑ इमली को पानी में भिगोकर निचोड़ें, इस पानी में चीनी, लौंग, पिसी इलायची और काली मिर्च और मूखकाफूर मिलायें उल्टी रोकने का यह कारगर उपाय हैं। इसके अलावा इमली की छाल को जलाकर उसकी 10 ग्राम राख को 125 ग्राम पानी में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पीने से उल्टी आनी बंद हो जाती है। इमली की 2 ग्राम राख शहद के साथ चाटने से पेट दर्द मिट जाता है। ❑ इमली-दस्तावर होती है। इसका शर्बत पीने से एक-दो दस्त साफ आते हैं। इसके अलावा पुराने कब्ज की शिकायत हो तो नियमित रूप से एक चाय का चम्मच इमली का गूदा खायें। 10-12 दिन में आराम हो जाता है। ❑ पित्त के विकारों में एक तोला इमली का गूदा या उतना ही शहद मिलाकर लेना लाभप्रद रहता है। ❑ गले में घाव हो जाने पर थोड़ी-सी पकी हुई इमली को पानी में उबालकर काढ़ा बना लें। इस काढ़े के गरारे करने से आराम मिलता हैं। ❑ हृदय मधुमेह के रोगियों को चाहिए कि वे एक-दो पकी हुई इमली यदाकदा खाते रहें इसके अलावा इमली के बीजों को सेंक कर प्रतिदिन खाते रहें। ❑ इमली का पन्ना बनाकर उसमें दालचीनी, इलायची और थोड़ी सी काली मिर्च का पाउडर मिलाकर खायें इससे भूख लगती हैं। ❑ गर्मी के दिनों में इमली को रात को पानी में भिगो दें। सुबह उठकर छानकर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पीते रहे। इससे गर्मी की उष्णता खत्म होती है। इसके साथ ही लू व नकसीर में भी फायदा होता हैं। ❑ इमली के रस में अंगूर का रस और हरे पुदीने का रस मिलाकर पीने से गर्मी का प्रकोप कम होता है तथा नकसीर में लाभ होता है।

टंकारा समाचार

के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

सुखी जीवन का आधार

मानव ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। मानव देह मानव को ईश्वर का अनुपम एवं अमूल्य उपहार है। उस परमपिता परमात्मा ने अपनी ''इक्षणा'' शक्ति को गति देकर इस सुन्दर सृष्टि की रचना की। अत: हम सब प्राणी उस परमपिता परमात्मा की सन्तान है। फिर मानव जीवन में इतनी विभिन्नताएं क्यों-

कोई कुबेर तो कोई दरिद्र नारायण, कोई अति सुन्दर तो कोई कुरुप। कोई विद्वान तो कोई करूप। प्रभु का अपनी सन्तान के साथ इतना पक्षपात पूर्ण व्यवहार क्यों? क्या प्रभु पक्षपाती तथा अन्यायकारी है। नहीं कदापि नहीं।

याथातथ्यतोडथार्न, न्व्यद्घच्छाश्वतम्यि:

(यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र, 8 समाभ्य)

परमेश्वर किसी से पक्षपात नहीं करता वह तो मात्र शुभकर्म कर्त्ता को सुखी और दुष्कर्मो को दु:खों का विधान करता है।

विभूषन् उभया अनुव्रता (मृ.म.6/सु.15/म.9)

ईश्वर पापी तथा पुण्य आत्मा दोनों को उनके कर्मानुसार गति प्रदान करता है। अत: कृत कर्मो के यथायोग्य कर्म फल भोगने के लिए मनुष्य योनी में मनुष्य सुख-दु:ख का भोग करता है। पूर्व जन्म के कार्यो के आधार पर यह शरीर मिला है और इस जन्म के कर्मो के आधार पर अगला जन्म मिलेगा।

अत: वेद की आज्ञा है कि व्यक्ति कर्म करते हुए सौ वर्षो तक जीने की इच्छा करें परन्तु दुरितों को छोड़ते हुए। क्योंकि उत्तम कर्म करने वाला व्यक्ति ही सदा आनन्द से भरपूर रहता है। फिर मानव बुरे कर्म क्यों करता है? महर्षि दयानन्द जी के सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि दु:खों का मूल कारण है 'अज्ञानता'। अज्ञानता का कारण है पांच कलेश:- अविद्याद्दस्मिता राग द्वेषाभिनि वेश कलेशा: योग दर्शन। पांच क्लेश है- (1) विद्या (2) अस्मिता (3) राग (असक्ति) (4) द्वेष (5) अभिनिवेष। अविद्या इन सब कलेशों की जननी है। हमारी पांच ज्ञनेन्द्रियों तथा पांच कर्म इन्द्रियां तथा ग्यारवां मन है इनमें कुवासनाओं का त्याग ही दु:खों से छूटने का एक मात्र उपाय है। अत: अपनी इन्द्रियों को अन्तर्मुखी बनाओ। इन्द्रियों को भगवान के साथ जोड़ो, भोगों के साथ नहीं। परन्तु इन सब में शक्तिशाली है मन। मन जड़ होते हुए भी महाशक्ति है। इसमें असीम शक्तियां समाहित है परन्तु मन चलायमान मान है। इसकी चंचलता प्रकाश से बीस गुना है। यह एक सैकेण्ड में पूरे ब्रह्मण्ड का भ्रमण कर लेता है। इस मन को वश में करना अति कठिन है। बड़े-बड़े ऋषि मुनि तपस्वी इससे हार जाते हैं। इसलिए कहा है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। मन को वश में करने का एकमात्र उपाय है ''एकाग्रता''। मन की एकाग्रता से व्यक्ति महान बन जाता है। ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है। शारीरिक शक्ति से मानसिक शक्ति अधिक सुदृढ़ होती है। यह शक्ति प्राप्त होती तप से इसके लगातार अभ्यास से। तप से मन की चंचलता मिटती है तथा मन शांत हो जाता है। जिस प्रकार चंचल पानी में परछाई दिखाई नहीं देती उसी प्रकार चंचल मन में ईश्वर की झलक भी दिखाई नहीं देती। वेद कहता है ''शिव संकल्प अस्तु'' मन को कल्याणकारी दृढ़ संकल्पो वाला बनाओं। शिव संकल्पों का मूल है-ज्ञान, कर्म, उपासन। इन सब में ज्ञान का मुख्य स्थान है। ज्ञानपूर्वक विचार हो तो श्रेष्ठ कर्मो को जन्म देते है। उत्तम कर्म ही मानव मन को उपासना की ओर खींच कर ले जाते हैं। जब मन ''शिव'' से परिपूर्ण होगा तो दुरितों को स्थान ही नहीं मिलेगा। अत: प्रतिदिन कुछ समय निकाल कर मन को तराशना चाहिए जैसे किसी ने मूर्तिकार से कहा तुम ने बहुत सुन्दर मूर्ति बनाई है। मूर्तिकार का उत्तर था। मूर्ति तो इस पत्थर में पहले से ही विद्यमान थी। मैंने तो मात्र इसे रूप दिया है। मन में शुभ विचार तो है परन्तु उन्हें जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मो के सूत से अपने भाग्य का वस्त्र बनाता है।

मन कोरा कागज है जो लिखोगे वह लिखा जाएगा। जीवन को देखने के दर्पण का नाम मन है। इसमें हमारे अच्छे बुरे कर्मो का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखाई देता है। सबसे बड़ा तोहफा है मन की शांति है। जहां शांति है उस घर भगवान दस्तक देता है। इस संसार की रचना करना ईश्वर का कार्य है। वह हर पल प्रत्येक प्राणी के लिए कल्याणकारी कार्य करता रहता है और ईश्वर यह भी चाहता है कि मानव भी उसकी तरह परोपकार करता रहे क्योंकि ने हर व्यक्ति में अपना अंश छोड़ा है। परमात्मा का वह थोड़ा सा अंश मानव के उत्तम कर्मो के द्वारा उसके लिए श्रेष्ठ बन जाता है अर्थात् वह प्रभु कृपा का अधिकारी बन जाता है। मानव जीवन का उद्देश्य ही मोक्ष प्राप्त है। **''कुर्वन्नेवेहे कर्माशी जिजि विषेच्छत् समा''।**

हे मानव! तू जीवन की जमीन पर प्रेम, स्नेह, दान, त्याग, तपस्या क्षमाशीलता सेवा तथा परोपकार की खाद डाले तो सद्गुणों की फसल होगी। अवज्ञा, उपेक्षा, अपमान, राग, द्वेष व निन्दा रूपी तेजाब सद्गुणों की फसल को जला कर राख कर देगें।

परमात्मा ने मनुष्य के लिए वेद को सूर्य के प्रकाश के समान संसार में प्रगट किया है। वेद के अनुसार ईश्वर भक्ति अर्थात् ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव को जीवन में धारण करना सुपात्रों को दान देना, दीन-दु:खियों की सेवा करना तथा मधुर वाणी बोलना आदि सब उत्तम कर्म है परन्तु इन सब कर्मो में सर्वोत्तम कर्म है ''यज्ञ''। यज्ञ का अर्थ मात्र हवन-कुण्ड में आग जलाना नहीं अपितु इसका अर्थ बहुत व्यापक है। सभी शुभ कर्म इसके पर्यायवाची है जो मानव पटल पर व्याप्त होने चाहिए।

यज्ञौ वै श्रेष्ठतम कर्म-यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है।

इंय ते यज्ञिया तनु:-तेरा यह शरीर यज्ञ के लिए है।

ईश्वर स्वयं भी हर पल हर क्षण यज्ञ कर संसार को शक्ति युक्त कर रहा है। ईश्वर कहता है ईर्ष्या, द्वेष को मत पूजो मैंने तुम्हें जो दान, प्रेम, सेवा, क्षमाशीलता जैसे अनेकों दिव्य गुण दिए है उनको अपने अन्दर धारण करो, इन्हीं के सहारे जीवन को श्रेष्ठ बनाओं। अत: हम सब वह करें जो ईश्वर हर समय कर रहा है। 'दान'। ईश्वर सब से बड़ा दानी है। सूर्य चन्द्रमा आदि की रचना कर हर पल हमें जीवन दान कर रहा है। ईश्वर चाहता है कि हम भी दानी बने। दान करना सचमुच जगत्पति भगवान को उधार देना है। जो भरी दिव्य सूद के साथ हमें वापस मिलता है।

''शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं किरं'' अर्थ 3/24/5

सौ हाथों से कमाओं और हजार हाथों से दान करों। जो अकेला खाता है वह पाप खाता है। मात्र धन का बोझ उठाता है। धन की तीन अवस्थाएं है 1.दान, 2. भोग, 3. विनाश भक्त भगवान से प्रार्थना करता है हे

प्रभु तू मेरा बचा हुआ धन वापस ले ले अर्थात भोग के बाद शेष धन मैं भूखे-प्यासे, दीन-दु:खियों तथा लोक-कल्याणकारी कार्यो में लगा दूं। हे भगवान तू मुझे चाहे थोड़ा धन देना पर चमकता हुआ धन देना जिसका एक-एक कण मेरी आत्मा में तेज भरने वाला हो। सच्ची कमाई का एक-एक पैसा हीरे के बराबर होता है। दान सदा सुपात्र को सुपात्र बन कर दें। अहंकार तथा, ''मैं'' भाव से दिया हुआ दान पतन का कारण बनता है। अन्त में विनाश को प्राप्त होता है। दान ऐसी समर्पित भावना से दो कि राजा (कुबेर) भी तुम्हारे चरणों में सिर झुका दें और स्वयं को बोना समझे जैसे एक विधवा दृष्टांत-महाराज रवि शंकर प्रतिमाह अपने राज्य के भिन्न-भिन्न गांवों के गरीबों को सहायतार्थ अन्न व धन की सहायता दिया करते थे। एक बार वह गरीब महिला की झोंपड़ी में गये। उसे धन देने का प्रयास किया परन्तु विधवा नारी ने सहायता लेने से इंकार करते हुए कहा कि महाराज! जब तक ईश्वर ने इतना बढ़िया शरीर दिया है तो मैं परिश्रम को छोड़कर मुफ्त का अन्न कैसे ले लूं। महाराज ने कहा कि तुम अपना गुजारा कैसे करोगी। वह बोली मैं युवावस्था में ही विधवा हो गई थी मेरे परिवार में ओर कोई नहीं था। जंगल से लकड़ी काटती हूं उसे बेचकर अपना गुजारा करती हूं। महाराज ने प्रश्न किया क्या उसके पति के पास कोई चल-अचल सम्पति नहीं थी। तीस बीघा जमीन। उसे बेच कर मैंने गांव की महिलाओं की सुविधा के लिए एक कुआं व हौदी बनवा दी। महिलाओं को तीन कोस पैदल चल कर पानी लाना पड़ता था। उस विधवा के उत्सर्ग व त्याग की कहानी सुन कर महाराज गद्‌गद् होकर बोले तुम धन्य हो देवी। धन से न सही मन से ही इतनी धनवान हो कि मैं भी तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकता तथा तुम्हें शत-शत वंदन करता हूँ। सत्य है नि:स्वार्थ निष्काम भाव से दिया दान धनदाता को परमात्मा का सखा बना देता है।

''दत्तान्मा यूषम''

हे! प्रभु मैं दान देना कभी न छोड़ू।

''त्वदीय वस्तु स्वात्मन तभ्य मेव समपर्ये''

तेरा तुझ को सौंप दिया क्या लागे मेरा।

''इदन्नमम''

मेरा तो कुछ था ही नहीं।

जो व्यक्ति ऐसी त्याग भावना से दान अर्पित करता है भगवान उसके लिए धनों के द्वार खोल देता है।

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 17 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)** **-प्रबन्धक**

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

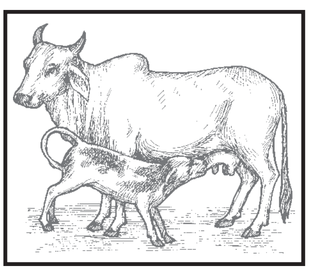

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

ક્રાન્તિવીરાંગના ૧૬મી નવેમ્બર જેમનો જન્મદિવસ છે – વિશેષ લેખ

રમેશ મહેતા ૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯ – ૯૩૨૭૦૨૬૯૭૦

માત્ર ૨૩ વર્ષની અલ્પાયુમાં ઝાંસીની રાણી લક્ષ્મીબાઈએ દેશ અને પોતાના પ્રદેશની સ્વાધીનતાને અક્ષુણ્ણ રાખવા માટે જે આત્મ બલિદાન આપ્યું, એ ઈતિહાસના પૃષ્ઠો પર સ્વર્ણાક્ષરોમાં અંકિત કરવા યોગ્ય છે. એમના સમકાલીન એક મરાઠા યાત્રી વિષ્ણુ ભટ્ટ ગોડસે સાથેના વાર્તાલાપના પ્રસંગમાં રાણીએ સ્વયં કહ્યું હતું કે એક હિન્દૂ વિધવાની સ્થિતિમાં એની આકાંક્ષાઓ સીમિત હતી. નારી પ્રતિ સદાય સંવેદન હીન તથા અસહજ રહેલા મધ્યકાલીન હિન્દૂ શાસ્ત્રોએ વિધવા માટે બે મુઠ્ઠી ચોખાના ભાત તથા બે સફેદ સાડીની જ અનુમતિ આપી હતી. આટલા અન્ન-વસ્ત્ર તો એને કમ્પની સરકાર દ્વારા સ્વીકૃત પેંશનમાંથી મળી જાત, પરન્તુ એ પોતાના રાજ્ય ઝાંસીને ગુમાવીને આત્મવંચનાનો શિકાર ન બની જાત? એની આત્માને વિદેશી આક્રમણકારીની અધીનતા ક્યારેય સ્વીકાર્ય નહોતી. એટલે જ તો ઝાંસીના રાજ્યને અંગ્રેજી અધીનતામાં લેવા માટે લૉર્ડ ડલહૌજીના આદેશની પ્રત્યક્ષ અવજ્ઞા કરીને એ અલ્પવયસ્કા રાણીએ સિંહ ગર્જના કરી હતી –

રાણીના મ્હોંએથી હું મારી ઝાંસી નહીં આપું, નો ભય રહિત ઉદ્‌ઘોષ સાંભળીને સભાસદોમાં પ્રસન્નતા ફેલાઈ ગઈ તો અંગ્રેજ કમિશ્નરનું આશ્ચર્યમાં મૂકાઈ જવું સ્વાભાવિક હતું. રાણીએ સરકારની એ ઑફરને નકારી કાઢી કે સત્તાના બાધ્ય કર્યા..

સમય વીતતો ગયો. માર્ચ ૧૮૫૮માં રાણીની શક્તિને કચડવા માટે જનરલ હ્યૂરોજના નેતૃત્ત્વમાં અંગ્રેજી ફોજે ઝાંસી પર ચઢાઈ કરી. રાણીના બે મુસલમાન તોપચી ગુલામગૌસ ખાં અને ખુદાબખ્શ શત્રુ સેના પર તોપ ગોળાઓની વર્ષા કરતા હતા. રાણી પોતે કિલાની પ્રાચીર પર કરાયેલી મોર્ચાબંદીનું નીરિક્ષણ કરતી કરતી સિપાહિઓનો જુસ્સો વધારી રહ્યા હતા. ૨૧મી માર્ચે અંગ્રેજી સેનાએ ઝાંસી પર ચઢાઈ કરી. દસ દિવસ પછી ૩૧મી માર્ચે કાનપુરથી નાના સાહેબ પોતાની સેના લઈને રાણીની સહાયતા માટે ઝાંસી પહોંચ્યા. રાણી તથા નાના સાહેબના સંયુક્ત આક્રમણને અંગ્રેજી સેનાએ નિષ્પ્રભાવી કરી નાખ્યું. નાનાના સેનાપતિ તાત્યા ટોપેને પીછે હઠ કરીને કાલપી જવું પડ્યું. જનરલ હ્યૂરોજે ઝાંસીની ઘેરાબંધી કરી. ત્રણ દિવસના ભયંકર યુદ્ધ પછી અંગ્રેજી ફોજ કિલામાં ઘુસવામાં સફળ થઈ. રાણીને પ્રિય ઝાંસી છોડવું પડ્યું. ભયંકર યુદ્ધમાં રાણીના હજારો સિપાહિઓએ પોતાની બલિ આપી.

પોતાના પ્રિય ઘોડા પર સવાર થઈને પુત્ર દામોદરને પીઠ પર દુપટ્ટાથી બાંધ્યો અને ઝાંસીના દુર્ગની વિદાય લીધી. ૨૪ કલાક વણ થોભે અશ્વારોહણ કરીને કાલપી જઈને તાત્યા ટોપેને મળ્યા. એ સમયે એમની પાસે માત્ર ૩૦૦ સૈનિકો હતા. રાણીની સહાયતા માટે પેશવા બાજીરાવના ભત્રીજા રાવ સાહેબ પણ એમની સાથે ભળી ગયા. એમને આશા હતી કે ગ્વાલિયરના સિંધિયા શાસક આઝાદીના દીવાનાઓને સાથ આપશે. પરંતુ સિંધિયાએ તો અંગ્રેજોને સાથ આપીને પોતાનું રાજ્ય બચાવી લીધું અને દેશદ્રોહિઓમાં નામ લખાવ્યું. રાણીની સેનાનો દબાવ વધી જતા સિંધિયા ગ્વાલિયરથી ભાગી છુટ્યા. હવે ત્યાંની ગાદી પર રાવ સાહેબને બેસાડી દીધા અને નવેસરથી અંગ્રેજી સેનાનો મુકાબલો કરવાની યોજના બની.

૧૬મી જૂને જનરલ હ્યૂરોજે મોટી સેના લઈને ગ્વાલિય પર ચઢાઈ કરી. રાણી બંને હાથોમાં તલવાર લઈને દુશ્મનોના બદલામાં એમને પાંચ હજાર રુપિયાનું માસિક પેંશન આપવામાં આવશે. બ્રિટિશ રાજ્યની આવી અવમાનના કરવાનું સાહસ રાણી લક્ષ્મીબાઈ સિવાય કોનામાં હતું?

વિધવા, એકાંકી તથા વિષાદગ્રસ્ત રાણીના કષ્ટોની કોઈ સીમા નહોતી. કહે છે કે એ રાત્રે રાણી પોતાના ઓરડામાં ખૂબ રડ્યા હતા, પરન્તુ ધૈર્ય ન ખોયું. બીજા દિવસે સવારે પુત્ર દામોદરને સાથે લઈને ઝાંસીના કિલ્લાને છોડીને શહેરની એક હવેલીમાં જઈને રહ્યા. હવે ઝાંસી અંગ્રેજોના અધિકારમાં હતું. રાણીનું જીવન ત્યાગ, તપ અને સંયમનું હતું. એમણે કમ્પની સરકારના ડાયરેકટરોની સેવામાં ન્યાય માટે પ્રાર્થનાઓ પણ કરી. ઝાંસીના રાજ્યને સ્વાયત્ત કરી દેવામાં આવે એ આશયના કેટલાય પ્રાર્થનાપત્રો મોકલ્યા પણ બહેરા કાનેથી સાંભળવામાં આવ્યા. કોઈ રાહત ન મળી.

અને આવ્યું ૧૮૫૭ નું વર્ષ. વિદેશી સત્તાના અભિશાપનો સો વર્ષ કરતા વધારે સમય વહી ગયો હતો. ૧૭૫૭માં પ્લાસીની લડાઈ જીત્યા પછી અંગ્રેજોએ બંગાળ, મુમ્બઈ અને મદ્રાસ પ્રાંતો ઉપર કબજો કરવા ઉપરાંત લખનઉની નવાબીને ધ્વસ્ત કરી, મરાઠાઓની સત્તાને કચડી, પંજાબમાં સિખ શાસનને ખતમ કરી નાખ્યું અને રાજસ્થાન તથા મધ્ય ભારતના રાજાઓ સાથે સંધિ-પત્ર લખાવીને એ બધાંને કમ્પની સરકારને અધીનસ્થ બનવા માટે દાંત ખાટા કરી રહ્યા હતા.એમણે ઘોડાની લગામ દાંતોમાં પકડી રાખી હતી. પરંતુ ભારતનું દુર્ભાગ્ય, રાણીને મેદાન છોડવું પડ્યું. હારેલા થાકેલા રાણીનો ઘોડો સામે આવેલ નાળાને કૂદી ન સકયો. દરમ્યાન શત્રુ સેનાના એક સૈનિકે પાછળથી રાણી પર આક્રમણ કર્યું. ઘાયલ રાણી ઘોડા પરથી પડી ગયા, શરીરમાંથી રક્તધારાઓ વહી રહી હતી. નજીકમાં આવેલ બાબા ગોવિન્દદાસના ઝંપડામાં ૧૮મી જૂન ૧૮૫૮ના દિવસે વીરાંગના લક્ષ્મીબાઈએ પ્રાણ ત્યાગ્યા. બાબા ગોવિન્દદાસે જ એમના અન્તિમ સંસ્કાર કર્યા. જોતજોતામાં સ્વાતંત્ર્ય પ્રતિમાં લક્ષ્મીબાઈ કીર્તિશેષ થી ગયા. રાણીના માહન ચરિત્ર તથા ઉજ્જવળ દેશભક્તિને આધાર બનાવીને કવિઓએ કવિતાઓ લખી તો ઈતિહાસકારોએ એમની શૌર્યગાથાને સ્વર્ણાક્ષરે અંકિત કરી. સુભદ્રા કુમારી ચૌહાણ, વૃન્દાવનલાલ વર્મા, દત્તાત્રેય બળવન્ત, વિષ્ણુ ભટ્ટ ગોડસે, જેવા લબ્ધ પ્રતિષ્ઠિત લેખક – કવિઓએ પોત-પોતાની રચના દ્વારા વીરાંગનાને અમર કરી દીધી છે.

ધ્યાન રહે કે રાણી લક્ષ્મીબાઈ કોઈ રાજપરિવારના સન્તાન નહોતા. ક્ષત્રિયકુલોત્પન્ન પણ નહોતા. એક સાધારણ બ્રાહ્મણના ઘરમાં જનમ્યા હતા. પિતા મોરોપન્ત મામૂલી કર્મચારી હતા. માતા ભાગીરથીતો તેમના બાલ્યાવસ્થામાં જ નિધન પામ્યા હતા. રાણીનું જન્મસ્થાન કાશીના ભદૈની મહોલ્લામાં છે, જ્યાં સડકના એક કીનારે જીર્ણશીર્ણ શિલાલેખ રાણીનું જન્મસ્થાન હોવાની સાક્ષી આપે છે. બાલિકાનું નામ કાશીના પ્રસિદ્ધ મણિકર્ણિકા ઘાટના નામ પરથી રાખવામાં આવ્યું હતું. જેના વિષયે એ વાત પ્રસિદ્ધ છે કે અહીં શિવપત્નીના કાનોની કર્ણિકા પડી હતી. લાડ-પ્યારમાં દિકરીને મનુ કે મનુબાઈ કહેતા હતા. પિતાને એ સમયે કાશી છોડીને બિઠૂર (કાનપૂર) જવું પડ્યું જ્યારે એમના આશ્રયદાતા ચિમનાજી આપાનું દેહાન્ત થઈ ગયું તો બિઠૂરમાં ત્યાના શાસક બાજીરાવ દ્વિતીયે મોરોપન્તને કામ આપ્યું અને બાલિકા મનુનું લાલન-પાલન નાના સાહેબ સહિત અન્ય રાજકુમારો તથા

એમના સાથી તાત્યા ટોપેના સાન્નિધ્યમાં થયું. મનુની ચપળતા, સૌન્દર્ય તથા નિર્ભીકતા આદિ ગુણોથી મુગ્ધ પેશવા બાજીરાવ આ દિકરીને સ્ત્રિયોચિત શિક્ષા આપવા ઈચ્છતા હતા

બાજીરાવે એને છબીલી નામ આપ્યું પરંતુ કોને ખબર હતી કે આ દિકરી ભારતની અદ્વિતીય વીરાંગના બનીને દુશ્મનોના દાંત ખાટા કરી નાખશે.

રાણીના જીવની લેખકોએ એમના નાનપણની ઘટનાઓનો ઉલ્લેખ કરતા કહ્યું છે – એક દિવસ નાના સાહેબ (પેશવાના દત્તક પુત્ર)ને હાથી પર જતા જોઈને છબીલી મનુએ પણ જિદ પકડી કે હું પણ હાથી પર બેસીશ. પિતાએ સમજાવી કે "દિકરી! તારા ભાગ્યમાં હાથીની સવારી નથી. તું દરિદ્ર બ્રાહ્મણનું સંતાન છે". ઉત્તરમાં મનુએ કહ્યું "પિતાજી, મારા ભાગ્યમાં એક નહીં કસો હાથી છે. હું મહારાણી બનીશ." રાણીનું આ કથન ભવિષ્યવાણી રુપે સત્ય સિદ્ધ થયું. ઝાંસીના વિધુર તથાપ્રૌઢાવસ્થાને પ્રાપ્ત રાજા ગંગાધરની સાથે ૧૮૪૨માં મનુબાઈના વિવાહ ઝાંસી નગરના વિનાયક મંદિરની નાટ્યશળામાં થયા જે આજે પણ વિદ્યમાન છે. નજીકના મહોલ્લામાં નિમ્બાલકરનની હવેલીમાં મનુનું નવવધૂના રુપમાં શ્રૃંગાર કરવામાં આવ્યા હતા. વિવાહ પછી મરાઠી પ્રથા પ્રમાણે નવાંગતા રાણીનું નામ ઝાંસીની કૂળદેવી લક્ષ્મીબાઈના નામ પરથી લક્ષ્મીબાઈ રાખવામાં આવ્યું. પછી લગભગ દસ વર્ષ સુધી મહારાણી લક્ષ્મી અસૂર્યમ્પશાની જેમ પરદામાં રહ્યા. ત્યારે કોને ખબર હતી કે રાજમહેલોની શોભા વધારનારા આ યુવાન રાણીને પોતાના સ્વત્ત્વની રક્ષા કરવા માટે ઘોડાઓ પર સવાર થઈ હાથમાં તલવાર લઈને શત્રુઓનો વિનાશ કરવો પડશે.

૧૮૫૧માં રાણીને પુત્રની પ્રાપ્તિ થઈ જે ત્રણ મહીનાનો થઈને પરલોક વાસી થઈ ગયો. રાજા ગંગાધર રાવ પુત્ર વિયોગ સહન ન કરી શકયા અને અસ્વસ્થ રહેવા લાગ્યા. ઈતિહાસ સાક્ષી છે કે તત્કાલીન ગવર્નર જનરલ લૉર્ડ ડલહૌજીએ સામ્રાજ્ય વિસ્તારની નીતિને અપનાવી હતી. તે પ્રમાણે એ રાજાઓ અને નવાબોના રાજ્યોને બ્રિટિશ ઈન્ડિયામાં ભેળવી દેવામાં આવતા હતા જે નિસ્સન્તાન મરી જતા હતા. રાજાઓ પોતાની રોગશૈય્યા પરથી જ ૧૬મી નવેમ્બર ૧૮૫૩ના દિવસે કમ્પનીના પોલિટિકલ એજન્ટ મેજર માર્ટિનને સૂચના આપી દીધી હતી કે સ્વયંને પુત્ર ન હોવાથી હિન્દૂ શાસ્ત્રોક્ત વિધિથી પોતાના જ વંશના વાસુદેવ નિમ્બાલકરના પાંચ વર્ષના પુત્રને દત્તક લઈ રહ્યા છે. તથૈવ દત્તક વિધાન પુરુ થયા પછી બાળકનું નામ દામોદરરાવ રાખવામાં આવ્યું.

દત્તક પુત્રને ગોદ લીધે હજુ ત્રણ જ દિવસ થયા હતા કે રાજા ગંગાધર રાવનું ૨૧ નવેમ્બર ૧૮૫૩ના દિવસે નિધન થઈ ગયું. આ સમાચાર મળતાં જ કમ્પની શાસનના મુખ્યાલય એલિસે ઝાંસીના રાજ્યને વિધિવત બ્રિટિશ ભારતમાં સમ્મિલિત કરવાની જાહેરાત કરી દીધી. રાણીને કિલ્લો છોડવા કહેવામાં આવ્યું અને નગરમાં રાજા ગંગાધર રાવે બનાવેલા એક મહેલમાં રહેવા જવાની આજ્ઞા આપવામાં આવી. રાણીએ પોતાના અધિકાર છીનવી લેવા પર કમ્પની સરકારને લિખિત પ્રાર્થના પત્ર મોકલ્યા અને અનુરોધ કર્યો કે ઝાંસી રાજ્ય સાથે કરેલ સંધિ પ્રમાણે એમને પોતાના રાજ્ય પર શાસન કરવાનો અધિકાર ત્યાં સુધી મળવો જોઈએ જ્યાં સુધિ પુત્ર દામોદર રાવ પુખ્ત વયના ન થઈ જાય. ૧૮૫૭માં જ ઝાંસી રાજ્ય સાથે કમ્પની સરકારે કરાર કર્યા હતા કે આન્તરિક વિષયોમાં ઝંસી સ્વાધીન રહેશે અને પ્રભુસત્તા સાથે કોઈ છેડખાની કરવામાં નહીં આવે. હિંદૂ શાસ્ત્રોમાંથી પ્રમાણ આપીને એ પણ કહેવામાં આવ્યું હતું કે દત્તક પુત્રનું વિધાન શાસ્ત્ર સમ્મત છે. રાણીએ પરંતુ મનુની સહજ રુચિ શસ્ત્ર-સંચાલન તથા અશ્વારોહણમાં હતી. પેશવા

પોતાના આ વિષયને લંડનના કંપની બોર્ડ ઑફ ડાયરેક્ટર સુધી પહોંચાડવા માટે વકીલ મોકલ્યા. આ કામ માટે એમને સાત હજાર રુપિયાનો ખર્ચ આવ્યો.

અંગ્રેજો દ્વારા રાણીનું આર્થિક દમનઃ- સ્વર્ગીય રાજા ગંગાધરરાવે કમ્પની પાસેથી જે ઋણ લીધું હતું એને રાણીના પાંચ હજારના મામૂલી પેંશનમાંથી વસુલ કરવા લાગ્યા. રાજ્યના કૂળદેવી મહાલક્ષ્મીના મંદિરના રાગ-ભોગ (પૂજા આદિ) માટે રાજાઓ જે બે ગામ આપ્યા હતા તે પણ જપ્ત કરી લીધા. રાજાના શ્રાદ્ધ સમયે રાણીએ બ્રાહ્મણોને જે ભૂમિ દાનમાં આપી હતી એનો અસ્વીકાર કરીને બ્રિટિશ રાજ્યમાં ભેળવી દેવામાં આવ્યા. રાણીના વ્યક્તિગત બાગ-બગીચા છીનવી લેવામાં આવ્યા. દામોદર રાવના નામે ઝાંસીના ખજાનામાં જે છ લાખ રુપિયા જમા હતા, એમાંથી યુવરાજ દામોદરની શિક્ષા – દીક્ષા માટે એક લાખ રુપિયા ઉપાડવાનો સમય આવ્યો તો એ રકમ ઉપર રાણીના અધિકારને માનવાનો ઈનકાર કરી દીધો ઉપરથી ચાર જામીન લાવવા કહેવામાં આવ્યું. પરમ્પરાથી પ્રચલિત ગો-વધ બંધીને સમાપ્ત કરી દેવામાં આવી અને ફિરંગી ફોજ માટે નિર્બાધ ગૌહત્યા થવા લાગી. આર્થિક જુલ્મો અહીં જ પુરા ન થયા. રાણીને પ્રમાનિત કરવાનો કોઈ અવસર અંગ્રેજોએ છોડ્યો નહીં તથાપિ સ્વાભિમાનના પુતળી રાણી લક્ષ્મીબાઈએ લાખો રુપિયાનો કર છોડીને કમ્પની સરકાર દ્વારા આપવામાં આવતા પેંશનનો સ્વીકાર કયારેય ન કર્યો. એમણે તો અંગ્રેજ એજંયને પહેલાજ કહી દીધું હતું

મૈં આપુન ઝાંસી કા દે હોં।

વિદ્રોહની ઘોષણા પછી પણ રાણીની ભલમનસાઈઃ- જ્યારે ૧૦ મે ૧૮૫૭ના દિવસે મેરઠના વિદ્રોહ પછી અંગ્રેજી શાસનને સમાપ્ત કરવાની ઘોષણા થઈ ગઈ તો ૫ જુન ૧૮૫૭ના દિવસે ઝાંસીના હવાલદાર ગુરુબખ્શસિંહ તથા જેલના દારોગા મોહમ્મદ બખ્શ ઉર્ફ બખ્શીશ અલીના નેત્તૃત્વમાં વિદ્રોહના આરંભ થયો. ગભરાયેલા અંગ્રેજો કિલામાં જતા રહ્યા. તો ક્રાંતિકારઈઓએ એમના રાશન-પાણી વિગેરે રોકયા. દયાળુ રાણીએ અંગ્રેજોને ભૂખ્યા તરસ્યા સમજીને એમને રાશન-પાણી મોકલવાનો આદેશ આપ્યો. તથાપિ વિદ્રોહ ચાલુ રહ્યો.૮ જુને નારાજ વિદ્રોહીઓએ જોખમ બાગમાં કેદી બનાવાયેલા બધા અંગ્રેજોને મારી નાખ્યા. તો અંગ્રેજોએ રાણીને બદનામ કર્યા અને નિર્દોષોના હત્યારા કહ્યા. જોકે રાણીનો આમાં કોઈ હાથ નહોતો. વિદ્રોહી સૈનિકોએ જ્યારે રાણી પાસે આર્થિક મદદ માંગી તો એમણે પોતાના બધા આભૂષણો ઉતારીને આપી દીધા. રોકડ તો એમની પાસે કંઈ હતું નહીં. છેલ્લે દેશની સ્વાધીનતાની રક્ષા માટે અને પોતાના રાજ્યના સ્વત્વને બચાવવા માટે યુદ્ધભૂમિમાં ઉતરવું પડ્યું. બાકીની ઘટનાઓ ઈતિહાસમાં સ્વર્ણાક્ષરે અંકિત થયેલી છે.

अपील

सभी आर्य बहनों से नम्र निवेदन है कि वह ऋषि भूमि टंकारा से अवश्य ही जुड़े, वहां पर होने वाले कार्यो को ध्यान से देखें। उन कार्यो में अपना सहयोग देकर ऋषि ऋण उतारने की कोशिश करें गुरुकुल में बच्चों को पढ़ा सकते हैं, छोटे बच्चों को बहुत कुछ सिखा सकते हैं-विशेषकर महिला सिलाई केन्द्र में सहयोग देकर बड़ा ही भला काम कर सकते हैं। जो बहन वहां जाने की इच्छा रखती हो, वह कृपया मेरे से सम्पर्क करें।

– राज लूथरा, जी आई 976, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली-110023, मो. 9971206548

स्मरण शक्ति कैसे बढ़े

❒ अभय कुमार जैन

प्राकृतिक तौर तरीके: प्रतिदिन नियमित रूप से खुली हवा में सैर करना अच्छे स्वास्थ्य और याददाश्त बढ़ाने में सहायक होता है। बाहर की खुली हवा व ताजा हवा में ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा शरीर को मिलती है जो मस्तिष्क में रक्त संचार की गति तेज करने में सहायक होती है।

- ❏ मन में स्थिरता रखें, तनाव को खुद पर हावी न होने न दें। तनाव व उलझनों से स्वयं को दूर रखें। सार्वजनिक हित के काम करें।
- ❏ फिजूल टी.वी. देखने के बजाय समाचार सुनने व समाचार पढ़ने की आदत डालें।
- ❏ पांच दस बार लम्बी गहरी सांस लें और फिर उतनी ही गहरी सांस छोड़ें। ऐसा श्वसन व्यायाम कई बार करते रहने से आपके मस्तिष्क को स्वच्छ ऑक्सीजन मिलेगी। यह मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाने में सहायक है।
- ❏ मस्तिष्क के लिए पर्याप्त नींद लेना आवश्यक है। इससे मस्तिष्क की कार्यप्रणाली सुचारू रूप में व तेज गति से होने में सहायता मिलती है क्योंकि जब हम सोते हैं तो मस्तिष्क को नई शक्ति व कई ऊर्जा मिलती है। अत: पर्याप्त नींद लेना भी आवश्यक है।

खान-पान

- ❏ एक किलो आंवले वर्गाकार बरनी में डालें ऊपर से 500 ग्राम शक्कर डालकर चम्मच से अच्छी तरह मिला लें। इसे 15 दिन तक तेज धूप में रखें। सुबह नाश्ते और रात को भोजन के बाद थोड़े दूध के साथ 2/3 पीस खायें।
- ❏ दो अखरोट रोज खायें। अखरोट खाने वाले की याददाश्त अच्छी रहती है।
- ❏ सुबह खाली पेट शहद के साथ चार-पांच काजू खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। इससे बुढ़ापे में होने वाले मैमोरी लॉस को भी रोक सकते हैं।
- ❏ बादाम की 2 गिरी तथा एक चम्मच सोंठ को दूध में मिलाकर सेवन करने से दिमागी ताकत बढ़ती है।
- ❏ स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए नित्य प्रात: आंवले का मुरब्बा खायें। हरे आंवले का रस भोजन के मध्य लें।
- ❏ शहद का सेवन नियमित रूप से करने वालों की याददाश्त कमजोर नहीं रहती है। शहद में तैयार मुरब्बा खाना हितकारी है। यह याददाश्त बढ़ाता है।
- ❏ आधा कप गेहूं के जवारे का रस नित्य पीने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। मस्तिष्क के सभी रोग ठीक हो जाते हैं।
- ❏ सिर पर घी की मालिश करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
- ❏ गुलाब का गुलकंद नियमित सेवन करें।
- ❏ दो चुटकी जायफल पाउडर ताजा आंवले के रस में मिलाकर दिन में 2/3 बार पियें।
- ❏ रात में आधा चम्मच शहद और 2/4 पत्ती केसर को एक कप दूध में मिलाकर उबालें और कुनकुना दूध पीयें।
- ❏ मुलहठी बुद्धि को तेज करती है। अत: छोटे बच्चों के लिए इसका उपयोग नियमित रूप से कर सकते हैं।
- ❏ दस तुलसी के पत्ते, पांच काली मिर्च, पांच, बादाम पीसकर थोड़ा सा शहद और पानी मिलाकर ठंडाई की तरह पीने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
- ❏ 30 ग्राम मक्खन में आठ काली मिर्च और शक्कर मिलाकर चाटने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।
- ❏ रात में आधा छटांक उड़द की दाल भिगो दें। प्रात: इसे पीसकर दूध मिश्री मिलाकर पियें। यह मस्तिष्क के लिए लाभदायक है।
- ❏ सौंफ और मिश्री समान मात्रा में मिलाकर चूर्ण बना लें। दोनों समय भोजन के बाद दो चम्मच चूर्ण (पाउडर) लें। मस्तिष्क की कमजोरी दूर होती है। प्राय: होटलों में भी भोजन के बाद सौंफ व मिश्री देने का प्रचलन है।
- ❏ आयुर्वेद के अनुसार ब्राह्मी, शंखपुष्पी, वच, असगंध जटामांसी, तुलसी, समान मात्रा में लेकर चूर्ण का प्रयोग नित्य प्रति दूध के साथ करने पर मानसिक शक्ति, स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है।
- ❏ शोधकर्ताओं का मानना है कि पालन व सभी हरी पत्तेदार सब्जियां खाना मस्तिष्क के लिए बहुत लाभदायक है।
- ❏ यदि आप यह महसूस करते हैं कि आपकी याददाश्त कमजोर हो गई है तो खाने में हल्दी का इस्तेमाल बढ़ायें।
- ❏ यदि कोई व्यक्ति किसी निदान योग्य मानसिक बीमारी से पीड़ित नहीं है तो स्मरण शक्ति बढ़ाने के निम्नांकित उपाय को अपनाने की सलाह दी जाती है।

नियमित शारीरिक व्यायाम

- ❏ तनाव प्रबंधन की तकनीकें अपनाकर तनावमुकत जीवन जीना।
- ❏ संतुलित एवं पौष्टिक आहार।
- ❏ जीवन शैली में परिवर्तन, धूम्रपान, मद्यपान एवं नशीले पदार्थो से मुक्ति।
- ❏ स्मरण शक्ति बढ़ाने की तकनीकों का प्रशिक्षण प्राप्त करना।
- ❏ अध्ययन के सही तौर-तरीके अपनाना।
- ❏ ईर्ष्या, द्वेष, भय, झूठ, अंहकार आदि मानसिक विकारों से बचने का प्रयास करें।

चाणक्य के अमर वाक्य....

- ❏ दूसरों की गलतियो से सीखो.... अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने पर तुम्हारी आयु कम पड़ेगी...।
- ❏ कोई भी काम शुरु करने के पहले तीन सवाल अपने आपसे पूछे मैं ऐसा क्यों करने जा रहा हूँ?, इसका क्या परिणाम होगा...?, क्या मैं सफल रहूँगा....?
- ❏ भय को नजदीक न आने दो..... अगर यह नजदीक आये तो इस पर हमला कर दो....। यानी भय से भागो मत इसका सामना करो।
- ❏ दुनिया की सबसे बड़ी ताकत पुरुष का विवेक और महिला की सुन्दरता है....
- ❏ काम का निष्पादन करो.... परिणाम से मत डरो...।
- ❏ सुगंध का प्रसार हवा के रूप का मोहताज होता है.... पर अच्छाई सभी दिशाओं में फैलती है....
- ❏ ईश्वर चित्र में नहीं चरित्र में बसता है... अपनी आत्मा को मंदिर बनाओ....।
- ❏ व्यक्ति अपने आचरण से महान होता है जन्म से नहीं...।
- ❏ ऐसे व्यक्ति जो आपके स्तर से ऊपर या नीचे के हैं उन्हें दोस्त न बनाओ....। वह आपके कष्ट का कारण बनेंगे...। समान स्तर के मित्र ही सुखदायक होते हैं.....
- ❏ अपने बच्चों को पहले पाँच साल तक खूब प्यार करो.... छ: साल से पंद्रह साल तक कठोर अनुशासन और संस्कार दो..... सोलह साल से उनके साथ मित्रवत व्यवहार करो....। आपकी संतति ही आपकी सबसे अच्छी मित्र है....

समाचार दर्पण

नेरूल में एक नए आर्य समाज की स्थापना

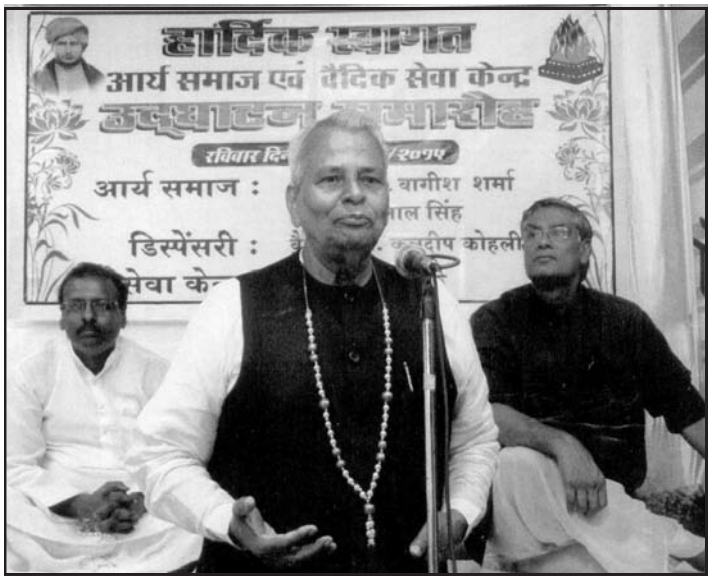

ईश्वर को.आपरेटिव हाऊसिंग सोसायटी, सेक्टर 50, नेरूल में आर्य समाज मन्दिर, आयुर्वेदिक औषधालय एवं वैदिक सेवा केन्द्र का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य वागीश जी के ब्रह्मत्व एवं पंडित विजयपाल शास्त्री, पं. नागेन्द्र शास्त्री एवं हरवंश शास्त्री द्वारा डॉ. कुलदीप कोहली के मुख्य यजमान के रूप में यज्ञ से हुआ। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान व आर्ष गुरुकुल एटा के कुलपति आचार्य डॉ. वागीश शर्मा जी के एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री मिठाई लालसिंह जी के हाथों आर्य समाज का उद्घाटन हुआ आयुर्वेदिक औषधालय का उद्घाटन राजबैध डॉ. कुलदीप कोहली डायरेक्टर आयुष, महाराष्ट्र द्वारा एवं सेवा केन्द्र का उद्घाटन श्रीमती नेत्रा शिर्के अध्यक्ष, नवी मुम्बई महानगर स्थायी समिति के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। डॉ. वागीश जी ने आज के परिपेक्ष में आर्य समाज व उनके सिद्धान्तों के प्रति पादन पर जोर दिया तथा उन्होंने डॉ. तुलसी राम बांगीया संस्थापक प्रधान आर्य समाज वाशी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध एवं भूतपूर्व महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई को इस समाज एवं सेवा केन्द्र की सफलता के लिए शुभ कामनाएं दी। श्री मिठाईलाल सिंह ने अध्यक्ष पद एवं डॉ. कुलदीप कोहली जी एवं श्रीमती नेत्रा शिर्के ने मुख्य अतिथि पद को सुषोभित किया। अंत में शांतिपाठ एवं ऋषि लंगर के साथ उत्सव का समापन हुआ।

जो मनुष्य धर्म से अर्थात् ईमानदारी से धन कमाता है। उस धन को अपना धन माने किन्तु अन्याय से अर्थात् झूठ बोलकर धोखा देकर, मिलावट करके, कम तोलकर, रिश्वत लेकर, रिश्वत देकर अपनों को धोखा देकर धन कमाता है। उसको अपना धन नहीं मानें। अन्याय से कमाया हुआ धन तो मनुष्य को पापी बनाएगा ही और दुःख भी देगा ही।

– स्वामी दयानन्द

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समारोह सम्पन्न

वैदिक विद्वानों को सम्मानित करने हेतु इलाहाबाद संग्रहालय में आयोजित 26वें पुरस्कार समारोह का उद्घाटन डॉ. राम प्रकाश कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. अधिराज राजेन्द्र मिश्र पूर्व कुलपति सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी, डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी एवं डॉ. राजेश पुरोहित इलाहाबाद संग्रहालय ने दीप प्रज्जवलित करके समारोह का उद्घाटन किया।

संग्राहालय का सभागार प्रयाग के प्रबुद्ध नगर वासियों से खचाखच भरा हुआ था, आरंभ में श्रीमती प्रतिमा गुप्ता तथा कृष्णा गुप्ता ने मधुर ध्वनि से वैदिक प्रार्थना एवं स्वागत गान प्रस्तुत किया। श्री राम जी ने तबले से संगत की। समिति के प्रधान श्री राधेक मोहन जी ने समागत विद्वानों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए स्वागत एवं अभिनन्दन किया। समिति के मन्त्री डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए वैदिक विद्वानों को सम्मानित करने के सत् कार्यो की विशद् चर्चा की। जिस समय मुख्य अतिथि डॉ. अधि राज राजेन्द्र मिश्र ने डॉ. राम प्रकाश जी को उनकी महत्वपूर्ण कृति गुरु विरजानन्द दण्डी पर 21000/- की पुरस्कार राशि एवं स्मृति चिन्ह तथा अंगवस्त्रम् से अलंकृत किया। डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय द्वारा हिन्दी अंग्रेजी संस्कृत एवं उर्दू भाषा में लिखे गये महत्वपूर्ण ग्रंथों की विस्तार से चर्चा की और कहा कि उनके दिवंगत हो जाने पर उनकी स्मृति पर संस्थापित गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कर समिति वैदिक धर्म के उन्नयन की दिशा में विद्वानों को सम्मानित करने का बहुत अच्छा कार्य कर रही है।

मारीशस के राष्ट्रपति से आचार्य चन्दशेखर शास्त्री की भेंट

प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने मारीशस के राष्ट्रपति से भेंट के दौरान उन्हें अपना साहित्य भेंट करते हुए महर्षि दयानन्द की उस सद इच्छा की चर्चा की जिसके अनुसार उन्होंने महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और ज्ञान देने पर बल दिया था। राष्ट्रपति भवन में महामहिम अमीना गरीब फकीम से शिष्टाचार भेंट के दौरान अध्यात्म पथ के संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने राष्ट्रपति महोदया की आयुर्वेद पर किये गये उल्लेखनीय कार्यो की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनके और मॉरीशस वासियों के सुखद जीवन की कामना की।

मनुष्य को चाहिए कि दूसरों के दोष उसके सामने कहे लेकिन उसको बदनाम करने के लिए तथा उसका मन दुखाने के लिए नहीं कहे। किन्तु प्रेम से समझाकर कहे जिससे वह मनुष्य अपने दोषों को दूर कर सके और उसके पीठ पीछे उसके गुणों को कहे जिससे दोषी मनुष्य दूसरों से अपने गुणों को सुनकर प्रेरणा लेकर अपने दोषों को दूर कर सके।

– स्वामी दयानन्द

स्वामी विरजानन्द पुण्य तिथि पर यज्ञ

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब के तत्वावधान में **डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर** द्वारा स्वामी विरजानन्द जी की पुण्य तिथि के अवसर पर आर्य समाज लोहगढ़, अमृतसर में पावन हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दलबीर सिंह चाहल, विद्यालय के चेयरमैन डॉ.वी.पी. लखनपाल एवं श्रेत्रीय प्रबन्धिका डॉ. श्रीमती नीलम कामरा विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रिंसीपल अंजना गुप्ता ने अतिथिगणों का स्वागत पुष्प मालाओं से किया। डॉ.वी.पी. लखनपाल जी ने कहा कि वैदिक मन्त्रों से मानसिक विकारों की शुद्धि होती हैं और हवन यज्ञ में होम की गई सामग्री वातावरण की अशुद्धि दूर करती हैं। डॉ. दलबीर सिंह चाहल जी ने कहा कि वेद हमारी संस्कृति का आधार है। विश्व को ज्ञान वेदों से ही मिला ह। वैश्वीकरण के इस युग में युवा पीढ़ी अपने जीवन मूल्य को भूल रही है। आर्य समाज की शिक्षाएं उन्हें अपने मूल की ओर लौटने की प्रेरणा देती है। इस अवसर पर विद्यालय के उन छात्र-छात्राओं को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया, जिनके जन्म दिन सितम्बर के महीने में आते हैं। हवन के उपरांत उन्हें वैदिक साहित्य आशीर्वाद के रूप में दिया गया।

बेटी बचाओ/पढ़ाओ कार्यक्रम आयोजित

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वूमेन, फिरोजपुर कैंट में नारी शिक्षा के प्रति महर्षि दयानन्द जी के योगदान के तहत प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया के मार्गदर्शन में स्वास्थ्य विभाग फिरोजपुर के साथ मिलकर एक कार्यक्रम के मुख्यातिथि थे इंजी, डीपीएस खरबन्दा, डिप्टी कमिश्नर, फिरोजपुर। कार्यक्रम का शुभारम्भ डी.ए.वी. गान से किया गया। तत्पश्चात मुख्यातिथि ने ज्योति प्रज्वलित की।

कॉलेज की प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द जी की नारी शिक्षा को देन के विषय में विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने तो नारी शिक्षा की अलख बहुत पहले ही जगा दी थी। उन्होंने कहा कि नारी सशक्त बन सकती है, केवल सुशिक्षित होकर। सिविल सर्जन डॉ. प्रदीप चावला ने कहा कि बेटी को पढ़ाने का काम कर रहे हैं। बेटी को बचाने का काम उनका विभाग कर रहा है लेकिन इन दोनों का सुखद परिणाम हम सब की मानसिक सोच को बदलने से मिलेगा। जिस दिन समस्त समाज इस मुद्दे पर एकमत होगा कि बेटी माता-पिता पर बोझ नहीं है, उस दिन यह समस्या स्वत: ही हल हो जाएगी।

कीर्तिमान स्थापित

डी.ए.वी. विद्यालय जींद में माननीय प्राचार्य महोदय श्रीमान हरेश पाल पांचाल जी की अध्यक्षता में सी.बी.एस.ई. द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता करवाई गई जिसका विषय ''तम्बाकू के दुष्प्रभाव'' था। उपरोक्त प्रतियोगिता में विद्यालय की कक्षा दसवीं की छात्रा ऋतिका ने ''राष्ट्रीय स्तर'' पर चुने गए 30 श्रेष्ठ निबन्ध लेखन में स्थान बनाया, जो कि विद्यालय व हिन्दी विभाग के लिए अति गौरव का विषय है।

विभिन्न गतिविधियों के तहत ही ''शिक्षा विभाग हरिया'' द्वारा आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यालय की कक्षा आठवीं की छात्रा तनिषा ने ''ग्रीन हाऊस इफैक्ट'' विषय पर मॉडल तैयार किया जो अब जिला स्तर पर चयनित होकर, स्टेट लैवल के लिए चुनी गई है। इस प्रकार डी.ए.वी. विद्यालय जींद सर्वोमुखी विकास की ओर अग्रसर है।

चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

एम.आर.,ए.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन (हि.प्र.) में आर्य युवा समाज के तत्वावधान में दो दिवसीय वैदिक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ किया गया। स्कूल की प्रधानाचार्या एवं आर्य युवा समाज की प्रधाना श्रीमती अनुपमा शर्मा के मार्गदर्शन में इस शिविर का आयोजन किया गया। डी.ए.वी. कुमारहट्टी और डी.ए.वी. सोलन के 60 विद्यार्थियों ने इस शिविर में भाग लिया।

शिविर के दौरान दोनों दिन प्रात: विद्यार्थियों को आसन प्राणायाम सहित विभिन्न यौगिक क्रियाओं के माध्यम से मन को एकाग्र करने की विधि का अभ्यास करवाया गया। इसके अतिरिक्त डी.ए.वी. सोलन के धर्माचार्य श्रीमान दीपक जी ने चरित्र एवं मूल्यों की आवश्यकता, सदाचार, समय नियोजन, नैतिकता का विकास आदि के महत्व पर प्रेजेंटेशन के दौरान संगीताचार्य श्री परविन्दर सिंह ने अपने मधुर भजनों द्वारा शिविर में उपस्थित बच्चों का मार्गदर्शन किया।

वेद-प्रचार एवं संस्कृत सप्ताह

डी.ए.वी. पटियाला द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह पर उपस्थित परनीत कौर पूर्व विदेश राज्य मन्त्री ने कहा कि वैदिक वेद विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाते हैं। राष्ट्र को विकास व नई दिशा की ओर ले जाने के लिए युवा पीढ़ी को वेदों का ज्ञान देना अति आवश्यक है।

बच्चों को हवन प्रक्रिया सिखाने हेतु विद्यालय परिसर में पूरा मास वैदिक हवन किया गया। बच्चों को संस्कृत भाषा के पठन-पाठन के लिए प्रेरित करने तथा वेदों का ज्ञान देने हेतु स्कूल में सप्ताह भर 'ईश्वरस्तुतिप्रार्थना उपासना मन्त्र एवम् श्लोकोच्चारण', 'वैदिक भाषण, 'वैदिक प्रश्नोत्तरी एवं 'वैदिक सूक्ति व्याख्या' प्रतियोगिताएँ करवाई गई। जिनमें लगभग 500 विद्यार्थियों ने बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्राचार्य एस.आर.प्रभाकर ने अतिथियों का स्वागत करके अपने सम्बोधन में कहा, ''हम बड़े भाग्यशाली कि हमारे पास 'सम्पूर्ण ज्ञान के भण्डार वेदों' की अमूल्य धरोहर है। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजयी रहने वाले विद्यार्थियों एवं उत्सव को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करने हेतु श्रीमती स्वराज शर्मा (संस्कृत विभागाध्यक्ष), सोनम (संस्कृत अध्यापिका) व श्री राजप्रसाद (माली) को ''वैदिक साहित्य'' के साथ स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

डी.ए.वी. सैंटेनरी पब्लिक स्कूल नाभा में द्वारा ''वेद प्रचार सप्ताह'' का आयोजन किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सात दिन तक नाभा शहर के तथा आस-पास के गांवों में वेद ज्ञान को लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। पहले दिन विद्यार्थियों ने नाभा शहर के सीनियर सीटिजन वैलफेयर एसोशिएशन में यज्ञ सम्पन्न किया दूसरे दिन नगर की आर्य समाज मन्दिर में यज्ञायोजन कर पं. दिनकर आर्य जी ने सुमधुर भजनों के द्वारा वेदों के महत्व को समझाया। इसी प्रकार विद्यालय द्वारा अमरगढ़, राजगढ़, मंढौर आदि गांवों में छात्रों के अभिभावकों के साथ मिलकर व अन्य गांववासियों के साथ मिलकर हवन यज्ञ किया। जिसे विद्यालय में नियुक्त श्री रोहित शास्त्री द्वारा सम्पन्न करवाया जाता। विद्यालय में संस्कृत दिवस का आयोजन यज्ञ द्वारा किया गया। सभी को संस्कृत भाषा के विस्तार व उसके द्वारा उत्पन्न अन्य भाषाओं के बारे में बताया।

पुरोहित एवम् उपदेशक प्रशिक्षण शिविर

देश विदेश धर्म प्रचार हेतु पुरोहित एवम् व्याख्यान के विशिष्ट प्रशिक्षण के निमित्त शास्त्री या उसके समकक्ष योग्यता वाले युवाओं के लिए त्रिदिवसीय शिविर आयोजित है। शास्त्री या उसके समकक्ष डिग्री आपेक्षित नहीं है। यदि आप स्वयं को इसके उपयुक्त समझते हैं और इस क्षेत्र में रुचि रखते हैं तो सम्पर्क करें। अभी प्रारम्भिक स्तर पर त्रिदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसके पश्चात् इसको विस्तार दिया जाएगा।

प्रशिक्षण विषयः (1) वैदिक दर्शन एवम् सिद्धान्त (2) कर्म काण्डों की प्रक्रिया और उनका वैज्ञानिक महत्व (3) व्याख्यान कला (4) लोक व्यवहार। प्रसिद्ध वक्ता और विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. विनय विद्यालंकार एवं आचार्य वीरेन्द्र विक्रम प्रशिक्षितो को प्रशिक्षित करेंगे।

इस शिविर का आयोजन दिनांक 16 से 18 जनवरी 2016 को होगा। पंजीकृत उपदेशक प्रशिक्षुओं को दिनांक 15.01.2016 को प्रशिक्षण स्थान पर पहुँचा होगा और वह दिनांक 19.01.2016 को अपने गन्तव्यों को प्रस्थान कर सकेंगे। निवास व भोजन का समुचित प्रबन्ध रहेगा। आपसे निवेदन है कि इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अपना नाम, पता, फोन नं, ईमेल आदि श्री सुरेन्द्र प्रताप- फोन : 011-46678389, 9953782813 या श्री राजीव चौधरी-मो. 9810014097 को पंजीकृत करायें।

निवेदक

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1

बी-31/सी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली-48, फोन : 011-29240672, 46678389

ईमेल : samajarya@yahoo.in osclkbV % aryasamajgk1.org

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अप्रिथधक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण का आयोजन

<u>आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज हि.प्र.</u> के संयुक्त तत्त्वावधान में **<u>हिमाचल प्रदेश के डी.ए.वी. विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए</u>** नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण दो दिवसीय कार्यक्रम किया गया।

मुख्यातिथि परम आदरणीय डॉ. पूनम सूरी जी व उनकी सहधर्मिणी जी ने राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चम्बा के परिसर में पवित्र वेद की वैदिक ऋचाओं द्वारा यज्ञ कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। यज्ञ में मुख्य यजमान के रूप में डॉ. पूनम सूरी जी व उनकी सहधर्मिणी बने। इस अवसर पर सचिव आर्य प्रादेशिक सभा श्री एस.के.शर्मा नई दिल्ली, प्रबंधक डी.ए.वी. चम्बा, श्रीमती स्नेह महाजन व उपप्रबंधक श्री.के.के. महाजन जी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि ने नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण के प्रथम सत्र के उद्घाटन भाषण में सम्बोधित करते हुए देश भक्ति, प्रभु भक्ति पर जोर देते हुए सत्य, आहार, सत्य विचार, सत्य व्यवहार, सत्य आचार और सत्य आधार के बारे में विस्तार में बताया। मान्य प्रधान जी ने कहा कि आज देश चारों ओर ओर से चरित्र हीनता के दल-दल में फंसा हुआ है जिसके चलते नैतिक मूल्यों को जानने और समझने की नितान्त आवश्यकता है। डी.ए.वी. 60000 अध्यापकों पर यह उत्तरदायित्व आ गया है कि वे विमल मन वालों छात्रों को नैतिकता का पाठ पढ़ाकर राष्ट्र के प्रति समर्पित करें।

कार्यक्रम में डाॅ. वागीश जी एवं महामहिम राज्यपाल के विशेष कार्याधिकारी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने मुख्यवक्ता के रूप में उद्बोधन दिया। डॉ. वागीश जी ने कहा कि मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो समाज में रहता है। उन्होंने कहा कि समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए नैतिक मूल्यों का होना अति आवश्यक है। आजकल प्रत्येक माँ-बाप अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर या वैज्ञानिक बनाने की चाह रखता है। इसी होड़ में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। जोकि समाज के लिए बहुत घातक है। डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं का प्रथम कर्त्तव्य है कि वे बालक को सही अर्थो में नैतिकता का पाठ पढ़ाकर मनुष्य बनाएँ। नैतिकता शिक्षा प्रशिक्षण के अन्तिम सत्र में डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने अपना उद्बोधन दिया। उन्होंने नैतिक शिक्षा के महत्त्व पर विशेष बल देते हुए शिक्षक-शिक्षिकाओं को मूल्याधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रेरित किया। मूल्यों के बिना बालक का विकास संभव नहीं है। प्रतिभा, व्यवहार, वातावरण बालक को मानव बनाने में सहायक तो हैं, परन्तु इस विषय में दिशा देना प्रशस्त शिक्षक एवं माता-पिता का ही कार्य है।

हमें किसी भी खास समय के लिए इंतजार नहीं करना चाहिए बल्कि अपने हर समय को खास बनाने की पूरी तरह से कोशिश करनी चाहिए !

टंकारा समाचार दिसम्बर 2015
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-12-2015
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.11.2015

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला मोरबी- 363650 (गुजरात) दूरभाष: (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 06, 07, 08 मार्च 2016 (रविवार, सोमवार, मंगलवार,) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 01 मार्च 2016 से 07 मार्च 2016 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर), श्री दिनेश पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट)

बोधोत्सव

सोमवार दिनांक 07.03.2016

अध्यक्षता: श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

कार्यक्रम के सम्भावित आमन्त्रित विद्वान्:

स्वामी शान्तानन्द (गांधीधाम), **स्वामी आर्येशानन्द जी** (माउन्ट आबू), **डॉ. महेश वेदालंकार** (दिल्ली यूनिवर्सिटी), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (मन्त्री कन्द्रीय सरकार), **श्री बावनभाई मेतलिया** (स्थानीय विधायक), **श्री कान्ति भाई अमृतिया** (विधायक मौरबी), **श्री वाद्यजी भाई बोडा** (अध्यक्ष कृषक भारती), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री एस.के.शर्मा** (मन्त्री प्रादेशिक सभा), **श्री विनोद शर्मा** (यू.एस.ए.), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए), **श्री वाचोनिधी आर्य** (गांधीधाम) एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज, शिक्षण संस्थान तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भिजवायें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज ''अनारकली'' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 अथवा टंकारा राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें जिससे व्यवस्था बनाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल	शिवराजवती आर्या	रामनाथ सहगल
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	(उप-प्रधाना)	मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय